Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

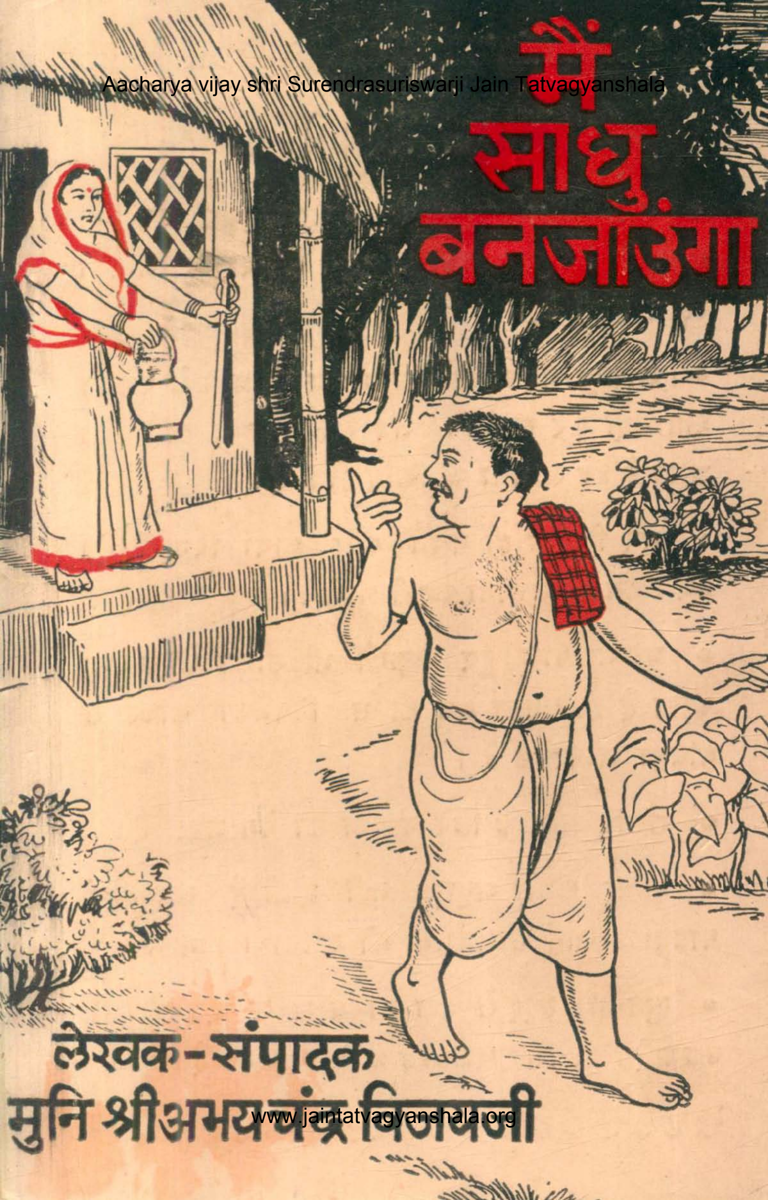

मैं साधु बनजाऊंगा

लेखक-संपादक
मुनि श्रीअभयचंद्र विजयजी

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

* सद्विचार वाणी *

* बाह्य पौद्गलिक पदार्थों से आत्मा कभी तृप्त नहीं होता है किन्तु उनका परित्याग से वैराग्य भावना उत्पन्न होती है।

* श्मशान वैराग्य से आत्मा आत्मसाधना के पथ को प्राप्त नहीं कर सकता। जब रोम रोम में धर्म फैल जाता है तब साधना की सिद्धि होती है।

* मन बिगड़ते ही बचन और काया विगड़ती है। प्रथम मन की साधना करनी चाहिये।

* घर में पाले हुए पशु को भी सांकल से बांधना पड़ता है इसी तरह मन को भी नियमरुप सांकल से बांधना आवश्यक है।

* संसार त्याग के लिये वैराग्य का वेग जरुरी है।

* काया कभी अनुकूल नहीं होती है, अतः 'देहं पातयामि कार्यं साधयामि' को अपनाना होगा।

* खुन-मांस हड्डी से भरा मानव शरीर इन हेतु से उत्तम है कि उनके द्वारा मोक्ष प्राप्ति की जाती है।

www.jaintatvagyanshala.org

आचार्य श्री विजय रामसूरीश्वरजी ग्रंथमाला – १८
Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

मैं साधु बन जाऊंगा

-: लेखक व संपादक

परम पूज्य शासनप्रभावक आचार्य भगवंत

श्री विजय रामसूरीश्वरजी महाराज साहेब

के शिष्य रत्न

मुनिराज श्री [illegible]चंद्र विजयजी

-: हिन्दी अनुवाद :-

सेवंतीलाल के० शाह

लक्ष्मीकांत छल्लानी

(आकोला)

●

-: प्रकाशक :-

आचार्य श्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्व ज्ञानशाला

झवेरीवाड, प[illegible], अहमदाबाद-३८०००१
www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

—: प्राप्तिस्थान :—

आचार्य श्री सुरेन्द्र सूरीश्वरजी जैन तत्व ज्ञानशाला
झवेरीवाड, पटणीनी खडकी अहमदाबाद-३८०००१

✳

शाह जयंतीलाल प्रेमचंद
C/O. शाह ट्रेडींग कोरपोरेशन
५४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००१

✳

वीर सं० २५०३ ✳ विक्रम सं० २०३३
वैशाख शुक्ला ३ (अखात्रीज)

प्रत १००० ✳ मूल्य रु० ३)

—: मुद्रण :—
मनीष प्रिन्टर्स ✳ २८, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००७३ ✳ फोन : ३४-६६६०

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

पहले पहल.........

रंगराग में मस्त बनकर मार्ग से भटके हुए मानवी को आत्मसाधन के पवित्र पथ पर लाने के लिये कई निमित्तों में सन्मार्ग प्रेरक कथाए है। उन कथाओं के वांचन, मनन, चिन्तन द्वारा मानवी अज्ञान से उभर सकता है।

तत्पश्चात् दुःखों से भरपुर सांसारिक सभी प्रवृत्तियाँ छोड़कर चिदानंद में डुब जाता है।

सरल हिन्दी भाषा में वैराग्यसंयुक्त इन कथाओं को "मैं साधु बन जाउंगा!" नामक छोटीसी पुस्तिका में प्रकाशन करते हुए अत्यानंद का अनुभव करता हुँ।

यह लघु पुस्तिका आम जनता को उपयोगी एवं सन्मार्ग प्रेरक हो।

आशा है की हिन्दी में प्रथम प्रकाशित यह पुस्तिका मानव हितवर्धक बने यही अभिलाषा।

मुनि अभयचंद्र विजयजी

६ केनींग स्ट्रीट, कलकत्ता

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

यह पुस्तिका प्रकाशन में लाभ लेनेवाले सद्गृहस्थो

- तरुणाकुमारी के उपधान तप की स्मृति में सादडी निवासी [राजस्थान] श्री चंपालाल चुनीलाल पुनमीया।

- श्री बिजय सिंह बडेर की कन्या स्वर्गीय कुमारी सरिता बडेर की स्मृति में।

- एक सद्गृहस्थ।

- वाणेराव निवासी [राजस्थान] श्री हिमतमल नंदराम

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

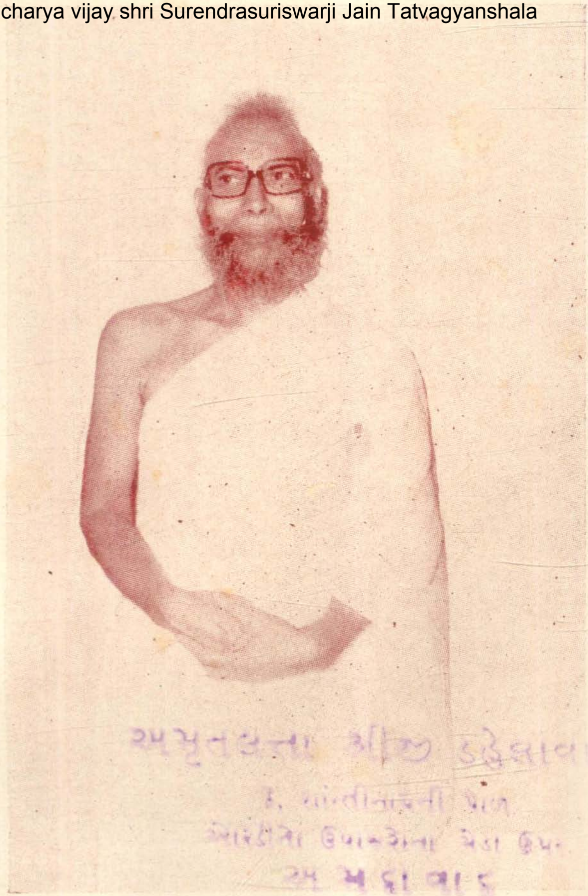

અ મ દા વા દ

परम पूज्य शासनप्रभावक आचार्य भगवंत

श्री विजय रामसूरीश्वरजी म० सा०

([illegible]ले)

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

—: अनुक्रम :—

विषय :	पृष्ठ नं०
मैं साधु बन जाउंगा	१
सत्संग	८
रेखा	१५
समर्पण	१६
प्रारब्ध	३५
भाग्य का खेल	५०
कौन किसका सगा	७०
लंगोट सर पर लगी	७६
न्याय की अग्निपरीक्षा	८०
पाँच शेर	८८
और पेटी से निकला बन्दर	६७
लोभ पाप का मूल	१०८
पुरुषार्थ	११२

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

* रत्न कणिका *

* शास्त्रों के ज्ञान बिना हिताहित समझा नहि जाता।
* कल्याण के साधनों में संतोष लाये बिना संसार के साधनो में संतोष लाने से शांत जीवन बन सकता है।
* शेर के मुंह में से मृगको छोड़ाना कठीन है उसी तरह मृत्यु के मुख में से आत्मा को रिहा करना कठीन है।
* धर्महीन मानव का मृत्यु कष्टदायी बनता है।
* जीवन उत्थान के लिये सत्य की आवश्यकता है।
* एक इच्छा दुसरी इच्छा को जन्म देती है।
* आपातस्थिति से रक्षण करने वाला धर्म है।
* राग द्वेष का क्षय से कर्मो का क्षय होता है।
* ब्रह्मचर्य से आत्मशक्ति प्रगट होती है।
* विषय कषायों दुर्गति के हेतुभूत है।
* तप आत्माकी निर्मलता के साथ शरीर स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये भी उत्तम औषध समान है।
* भौत्तिक सुख की मलीन वृत्तियां तप द्वारा निर्मुल होती है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

उपधान तप आराधीका

तरुणकुमारी चंपालाल पुनमीया

www.jaintatvagyanshala.org

acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

मै साधु बन जाऊंगा

एक गांव में एक ब्राह्मण परिवार रहता था— पंडितजी कथा करवाते, शादीयां लगवाते और धार्मिक अनुष्ठान करके अपना जीवन जी रहे थे। पंडितजी का स्वभाव चिडचिडा था और पंडिताइन तो लौंगी मिरची के समान तेज और तुनक मिजाज थी। अतएव घर में हरहमेंश कलह का वातावरण बना रहता था।

पंडिताइन स्वभाव से सरल और विचारशील भी थी। वह गुस्से में पंडितजी से लड लेती थी, किन्तु अन्ततः वह उदार थी और उसका कोमल मन पश्चाताप से द्रवित हो जाया करता था।

पंडितजी अपनी पत्नी की इस कमजोरी को समझते थे, और छोटी छोटीसी बातों पर लडते थे धौंस पट्टी करते थे कि मुझे नाहक परेशान न करो नहितो 'मै साधु बन जाऊंगा'। पत्नी बेचारी उनकी

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
इस बात से अक्सर डर जाया करती थी कि भरोसा नही शायद साधु बन जायें और सन्यास लेले तो संसार ही लुट जाएगा।

पंडितजी एकवार रात्रि में यजमान के घर से देरी से लौटकर घर आये। भोजन करने बैठे—रसोई ठंडी हो गई थी, तपाक से पंडिताइन को ललकारा कि सारे गाँव की चर्चा में लगी रहती हो? रसोई भी गरम नही की जाती। पंडिताइन ने गुस्से में कडककर कहा कि आप गाँव के सरपंच नही हो। टाईम पर भोजन करने नही आए तो हुज्जत करना नही, समझे— बस. फिर क्या था जैसे आग में घी डाल दिया गया। और पंडितजी भडक उठें ठीक है मै चला साधु बनने कपडे निकाले और बोले अब तू अकेली रहना।

यह सुनते ही पंडिताइन घबरा गई और हाथपाव जोड़कर पंडितजी को मना लिया किन्तु रोज रोज की यह धौंस पट्टी और झगडो से पंडिताइन तंग आ गई और मानसिक तनाव तथा चिंता के कारण वह दिन प्रतिदिन मरणापन्न स्थिति को प्राप्त होने लगी। भय के कारण उसका खुन जलता रहता और वह मानसिक रूप से बीमार हो गई।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay Shri Surendrasuriswarji Jaina Tatvagyanshala
पंडिताइन के भाइने अपनी बहन की सारी स्थिति को देखकर करुणाभरे स्वर में पुछा—तुम्हारा शरीर हाडमांस का पिंजर बन गया है दवाई कराऊंगा या चिन्ता हो तो उपाय करुंगा—बहन भाई के आश्वासन से रो उठी—रो रोकर सारी स्थिति कहकर सुनाई और बोली तुम्हारे बहनोइ साधु बन जाने का हमेंशा भय दिखाते है मेरी जान जल जाती है।

भाई ने अपनी बहन को समझाया कि जो बादल गरजते है वह बरसते नही। जीजाजी सन्यास लेने वाले होते तो बार बार क्यों धौंस पट्टी करते? भाई ने बहन को स्नेह से समझाया कि साधु बनने वाले होते. तो कबसें बन जाते और इस तरह बार बार तुम्हे धमकिया नही देतें। तुम्हे डराने के लिए वो हमेंशा इस तरह कहकर मनमानी कर लेते है। कभी ऐसा हुआ तौ ये मेरी ज़िम्मेदारी है—तुम निश्चित रहो। भाई की बात सुनकर बहन को धीरज हुआ और शरीर में एक विश्वास उत्पन्न होकर मनोबल को वह प्राप्त हुये अतः अब पंडिताइन सारी कहानी समझकर बेफिक्र हो गई—तथापि बहनने भाई से प्रश्न किया कि ये सब बात तो ठीक है किन्तु तुम्हारे बहनोई साधु बनने की बात ही न करे ऐसा कोई रास्ता नही है क्या?

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
भाई ने मुस्कराकर कहा अरी बहन सीधा सरल रास्ता हैं—जानती हो जब भी ऐसी बात करे तुमने हंसकर उनका स्वागत करना और कहना आप साधु बन जाएगे तो पहले मेरा प्रणाम स्वीकार करो और ये भगवे कपड़े धारण करलों—कमंडल और माला भी लेलो—संसार की तारनेवाले अपने स्वामी पर मुझे अभिमान है शीघ्रता से साधु पंथ का स्वीकार करो।

बहन को यह योजना पसंद आ गई और भाई के यहां से भगवे कपडे, माला, कमंडल लेकर अपने घर लौट आई।

दिन शांती से बितने लगे किन्तु यह शांती शाश्वत कहां थी। फिर एक दिन पंडितजी ने गरम होके पंडिताइन के सामने साधु बनने का प्रस्ताव रखा ही था—कि पंडिताइन ने खुशी खुशी सारी सामग्री लाकर पेश कर दी - भगवे कपडे माला और कमंडल। यह देखते ही पंडितजी के होश उड गये मानो सारे ड्रामा का पटाक्षेप हो रहा हो। बिगडकर बोले अरी मुँहजली—मुझे साधु बनाकर ऐस करना चाहती है लड्डु खाकर दिन बिताना चाहती है तेरी नियत का पता चल गया मुझको। कोई बात नही अब तो बन जाता हुँ साधु—जनमभर रुलाऊगा तुझे।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
हाथवेर पटकते हुए उन्होंने भगवे वस्त्र धारण किये माया मच्चिन्द्र के समान अपनी वेशभूषा में खडे हो गये– यह दृश्य देखकर तनिक पंडिताइन घबराई और भाई की याद ही कर रही थी कि वे आ पहुँचे। भाई ने सारी स्थिति का अवलोकन किया और सांत्वना देते हुए कहा– बहन चिंता की बात नही है। सुनो

बहनोईजी ठंडी रसोई खा नही सकते। पापड तक भुनने का सलीका नही है. चटाई पर सोने से बदन दर्द करता है ऐसे तुनक मिजाज मेरे बहनोई भला साधु बनकर सांसारिक सुखभोग का त्याग करके कष्ट उठा सकेंगे, वो तो दो चार दिन में भटक कर लौट आएगे शांति रखो सब ठीक हो जाएगा।

पंडितजी भी सारी स्थिति समझते थे—लाचार थे अब अपना किया हुआ यह नाटक स्वयं को महंगा पड रहा था, मसजिद मियाजी के गले पड रही थी वे साधु बनकर तपाक से निकल पडे।

दिन बिता सांज भी आई, भुख की ज्वाला ने दुर्गत बनाई किसी यजमान से मिलकर थोडा सा दूध सेवन

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Shri Vijay Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

किया – पांच सेरी पंड्या और ढूंढके मर पूछ क्या काम आता ? शहर के बाहर किसी उजाड मंदिर के ओटले पर रात्रि का निवास – हाय तोबा में जीवन दुःखी हो रहा था। रात्रि के सन्नाटे में गांव के बाहर जंगली प्राणीओं की भयावह आवाजें आ रही थी नींद का नाम नही था, कि करवट बदलते ही देखते है, साप जा रहा है अरे बाप रे बाप रक्तचाप शीथिल होने लगा, प्राण कांप रहे थे। भगवे वस्त्र पर तिरस्कार हो रहा था और पत्नी की सेवा शुश्रुषा और दो गालियों पर प्यार उमड रहा था। जीवन की सारी स्थिति समझ में आ गई थी। पतिपत्नी के संसार के मेकाजोल का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था।

पंडितजी हारकर घर की ओर लौट रहे थे दूर से पंडिताइन ने साधु महाराज को आते देखा और पुनः दरवाजा बंद करके घर के काम में व्यस्त हो गई– यह सोचकर कि अगर वे आये तो खुलाशा करनाही है अंतिम वार कि मै साधु बनकर जाऊंगा या मधुर संसार निभाऊंगा।

खट् खट् खट् पंडिताइने आवाज सुनी कौन है ? दरवाजा खोलो देवी मैं हुं तुम्हारा पति, 'पंडितजी"

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

अरे भाई कोई लुच्चा लोगा हूँ मेरा पति तो साधु बन गया है – आगे जाओ –

पुनः विनम्र आवाज – लुच्चा नही देवी, मै वही साधु हुँ तुम्हारा पति लौट आया हूं। अगर ये सच भी है तो मुझे पाप में मत डालो जाओ साधु बनकर संसार का कल्याण करो। नहीं देवी नही मुझे क्षमा करो। मै तुम्हारा सांसारिक बात को समझ गया हुँ, कभी साधु बनने की धौंस पट्टी नही करूंगा – तुम्हारे पैर पड़ता हुं दरवाजा खोलो।

अंततः पंडिताइन ने दरवाजा खोला पंडितजी ने शान्ति से जीवन को समझा और संसार की गाड़ी को बराबरी से चलाने का कृत संकल्प लिया।

वैराग्य प्राप्ति लोहे के चने चबाना है साधु बनना सरल नही, दुष्कर कार्य है। सांसारिक सुखभोग का परित्याग करके साधु बनने का प्रयास करो तभी साधुता के आचरण का दम भरो यही प्रार्थना।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

सत्संग

सत्संग कितना कोमल और सुंदर शब्द हैं। संत-समागम मानव की मानवता को सदाबहार रखता है। मुर्ख को महान बनाता है। दानव को देवता स्वरूप बना देता है। पत्थर को पारस बना देता है।

एक दिन नारद जी ने भगवान से पुछा, भगवंत! सत्संग का फल क्या? भगवान ने कहा, हे नारद! उस तरफ किचड में एक किडा है वह ही तुम्हे इस सवाल का जवाब देगा इसलिए तुम उस किडे के पास जाओ।

अत्यंत श्रद्धालु नारदजी कोई भी तर्क-वितर्क किये बगैरे जलदीसे किडे के पास गये। जवाब मिलना तो दूर पर किडेसे सवाल पुछते ही वह मर गया। इससे दुःखी हो नारदजी भगवान के पास आये और कहने लगे प्रभु गजब हो गया आपके कहने के अनुसार मैं किडे के पास गया था। मैंने उससे सवाल भी पुछा था।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
मगर जवाब देने की बजाय वह तो मर गया। हे भगवान मुझको खाली पाप में डालने के बजाय सच-सच बतादो तो मेरे मन को शान्ति मिले।

अरे नारद.. इस तरह दुःखी क्यों होते हो? देखो सामने एक वृक्ष पे पोपट का घोंसला है और उस घोसले में पोपट का एक बच्चा है, जिसने अभी-अभी जन्म लिया है। उससे जाके पुछो वह तुम्हे सत्संग का फल बतायेगा।

भगवान के वचन सुनकर नारदजी उसके पास गये और उससे सत्संग का फल पुछने लगे। सवाल पुछते ही बच्चेने आंख खोलकर नारदजी की ओर देखा और कुछ ही पल में उसकी आंखे बंध हो गयी बेचारा मौत के गले मिल गया।

इस घटना से तो नारद जी तो भयभीत बन गये। मनमें सोचने लगे कि, "अरे मेरे समझ में नहीं आता कि, ये क्या हो रहा है? जिससे ही पृछता हुँ वह वही मर जाता है! क्या सत्संग का फल ही मौत है?" विचारों के तुफान में घिरे हुये नारदजी फिर भगवान के पास आये।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

अरे प्रभु गजब हो गया, गजब हो गया आपके कहने के अनुसार मैं जिससे भी सवाल करता हुँ वह वही मर जाता है। अब मुझे आपकी सलाह नही लेनी है. और आपसे कुछ पुछना भी नही है बिनाकाम ऐसे निर्दोष प्राणियों कि हत्या का फल मेरे सिर पे लुं? और मुझे तो ऐसे लगता है, कि सत्संग का फल ही मौत है।

नारदजी की बात सुनकर भगवान खिलखिलाकर हंस दिये। और कहने लगे. अरे नारद! इस तरह डरो मत तुम्हे सच्ची बात जानना ही हो तो अब देर किये बिना जलदी से जाओ और उस गाय के बछडे को जिसने अभी जन्म लिया है. उससे जवाब पुछो।

नारदजी डरते डरते बछडे के पास गये। कही सवाल पुछते ही बछडा मर न जाय इस डरसे धिरे से उसके कान के पास मुंह ले जाकर पुछने लगे, परंतु नारदजी से दृष्टि मिलते ही बछडा धरती पे गिर पडा और थोडी ही देर में उसके प्राण निकल गये। इस घटना से नारदजी पसीनेसे तर-बदतर हो गये। और मारे डरके उनका शरीर थरथराने लगा गौ हत्या के पाप से उनका हृदय रो पड़ा।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

नारदजी वहा से सिधे भगवान के पास गये। और चिल्ला उठे कि हे प्रभो ! आपने क्या निश्चय किया है ? क्या ? इस नारद को नरक दिखाना है ? सवाल का जवाब न आता हो, तो 'ना' कह दो ! नाहक क्यों पाप की गठडी बंधवाते हो ?

नारदजी को शान्त करते हुये भगवान ने कहा हे नारद ! अब में तुम्हे सत्य बताता हुँ वहाँ से तुम्हे अवश्य जवाब मिलेगा। देखो इस नगर में राजा के यहाँ आज ही राजपुत्र का जन्म हुवा हैं। उस राजपुत्र के पास जाके सवाल पुछोंगे तों अवश्य जवाब मिलेगा।

जी हा...जी हा ठीक बताया महाराज ! इसमें जों जों कुछ हो जाये तो मेरे वही पे बारा बज जाय। पहले पशु पक्षी थे इसलिए कुछ कठिनायी न थी परंतु यह तो राजकुमार·· सवाल पुछते ही पहले के जैसा हो तों मेरा वही पे घाट घड जायेगा। महाराज ! अब मुझे जवाब नही चाहिये।

नही नही नारदजी जरुर जाओं अब तों ऐसा कुछ भी न होंगा। राजपुत्र तुम्हे सत्संग का फल जरुर बतायेगा। और वह मरेगा भी नही।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

पैरों में शक्ति नहीं, मन में आशा की एक भी रेखा नहीं, चित्त में चमक नहीं, फिर भी कृत्रिम दिखावा करके नारदजी राजदरबार में गये। और खुदके आनेका कारण बताते हुये कहने लगे "राजन आपके यहाँ पुत्र जनम हुवा है। मुझे राजपुत्र से कुछ बातें करनी हैं, उसे दरबार में मंगावो।

राजाने नारदजी का आदर-सत्कार किया। और कहा हे ऋषि! बालक तो अभी जन्मा हुवा है वह आपके साथ क्या बाते करेगा? और बालक अभी सभा में लाने योग्य नही।

चाहे कुछ भी हो राजन! मुझे राजकुमार के दर्शन करना ही है। इसलिये आप इसकी व्यवस्था करो।

नारदजी के अती आग्रह के कारण राजा उन्हे अतः पुर में ले गये। और बालक से मिलवाया!

नारदजी ने खुद के पास का तंबुरा एक तरफ रखा उंगलीओ से चुटकी बजाते हुये बालक का ध्यान आकर्षित किया। बालक नारदजी की ओर देखने लगा। तब उन्होंने पुछा, बेटा! सत्संग का फल क्या? तु मुझे बता।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
नारदजी की वाणी सुनते ही बालक हंसने लगा। और बोल उठा कि, हे महामुनि! अभी भी आपको सत्संग का फल जानने को नही मिला। अच्छा आपने मेरा पीछा पकड़ा ही है तो सुनो ..

पहले मै किडा था। उस वक्त आप मुझे सवाल पुछने आये, आप जैसे संत के दर्शन से निच गती में से छूटकर अच्छी ऐसी पोपट गती में जन्म लिया। फिर आपके दर्शन होते ही दर्शन के प्रभाव से गाय की कुक्षि में उत्पन्न हुवा। जन्म के साथ ही आप जैसे पुज्य के दर्शन हुये वहाँ से मरके राजा के यहाँ जन्म मिला है। आप जैसे संत के दर्शन मात्र से एकके बाद एक ऊंची गती मुझ को प्राप्त होते गयी। यहाँ राजा के घर भी आपने मुझे दर्शन का लाभ दिया। इसलिए अब मै आगे जाकर सम्राट की पदवी प्राप्त करुंगा। और फिर आपकी कृपासे संसार के बंधन से मुक्त हो जाऊंगा।

महाराज संत पुरुषों के दर्शन संसार में भटकते हुये जीवों का उद्धार करने वाले होते हैं। संत पुरुषों के दर्शन का जब इतना प्रभाव है, तो निरंतर सन्तो की सेवा करने वाले कितने भाग्शाली होंगे!"

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijay Ram Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

मुनि को प्रणाम करके बालक बोलता हुआ चला गया और नारदजी भी राजा को और बालक को आशिर्वाद देकर वहाँ से चल पड़े।

जरा धिरे धिरे...इतने हांफते-हांफते और धमधम करते क्यों आ रहे हो नारदजी ? भगवान ने कहा।

नारदजी कहने लगे "भगवान ! क्या कहुँ आपको ? सच में आपकी माया अपार है।

स्नेह के बन्धन में बन्धते समय प्राणी क्षणिक आनंद में सब कुछ बिसार देता है। और वियोग में, बिसारे हुए सब क्षणों से, नफरत करता है। यह जन्मी नफरत उसके जीवन को निर्लज्जतापूर्ण बना देने में सक्षम होती है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

रेखा

शाम ढले खाना वाना खाकर बंगले के बैक साईड में आये हुये छोटे बगीचे में आराम कुरसी डालकर बैठे बादमें हरे भरे वृक्ष और सुगंधी पुष्पों के साथ टकराकर आती हुवी हवा इतनी तो खुशनुमा थी कि, पुरे दिन की थकन, परिश्रम से सुस्त बना हुआ शरीर और मानसीक विचारों से तंग बना हुआ मन एकदम प्रसन्न और स्वच्छ स्वस्थ बन जाता है।

हाथ की दोनों हथेलीयों से सिर के बाल ठिक कर के मुहपर फिराने के बाद उस हथेलीयों के सामने नजर दौडायी तब वहाँ आडी तिरछी खडी, आडी और एक दुसरे से क्रास करती हुयी रेखाए देखकर आश्चर्य आनंद-कुतुहल के साथ मानसिक तार में विचारों का एक प्रवाह तीव्र गती से पसार हो गया कि।

वाह···कमाल है रेखा शास्त्र ! सामुद्रिक शास्त्र !

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
रेखा के सहारे संपुर्ण जीवन का निचोड निकाल देना है निराशा के अगाध जल में डुबें हुये को आशा रुपी किनारे पर पहुँचा देता है, फिर तो निराशा को त्यागकर वो जीव उसके जीवन को अरुणाचल के शिखर पर चढाकर मनही मन हंसता रहता है ।

गरीब से लेकर अमीर तक और सुखमें महालते अथवा दु ख में पीडित सभी कौ रेखा के रहस्य का जानने की उतनी ही उत्कंठा, जिज्ञासा लगी रहती है ईसलिए ही रेखा के रहस्य को जाननेवाले रेखाशास्त्रि-योंके घर के दरवाजे पर दस्तक मारते हुये हाथ लंबा करके खडे रहते हैं । और लगभग प्रत्येक आदमी एक ही सवाल पुछता है कि देखो मेरी रेखा ? मेरा भावी जीवन सुखी हैं कि नहीं, धनपति होने के भाग्य है कि नहीं ? परंतु अफसोस की बात तो यह है कि, यशरेखा, धनरेखा, पत्निरेखा, परिवाररेखा आदि सभी रेखाओं को खास चीवटपूर्वक घुमफिर के बारंबार बदलता है और उसके अनुकुल प्रतिकुल जवाब सुनकर मानसिक भाविका परिवर्तन करता रहता है । परंतु जिसके अस्तित्व में सबका अस्तित्व समाया हुवा है ऐसी आयुष्य रेखा को जानने की इच्छा बहुत ही थोडी रहती हैं ।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya manijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

एक [illegible] का [illegible] वर्ष का आयुष्य को जानकर ज्यादा की पंचायत किये बिना जो जीवन को सुन्दर बनाने के प्रयत्न में व्यग्र रहता है वही सच में सुन्दर भाग्य का निर्माता कहलाता जाता है ।

जीवन के लक्ष्य बिंदु का ध्यान में लेकर उस तरफ दृष्टि केन्द्रित करके एक ही रेखा पर चलने वाले दुःख, शोक, संताप रहित अपूर्व आनन्द को मिलाने में अब सफल बनता हैं ।

जीवन की रेखा का उल्लंघन करनेवाला जीव ऐसा तो फेंका जाता है कि, फिर उसे वापस उसकी रेखा के उपर आने के लिये उतने ही परिश्रम कष्ट सहन करने की पराकाष्ठा पर पहुँचना पड़ता है ।

एरोप्लेन को चढ़ने उतरने के लिये उसकी हवाई पट्टी (हवाई पट्टीरुप रेखा) पर ही चलना पड़ता है । रात के समय हवाई पट्टी पर से उतर न जाय इसलिए दोनों तरफ ग्रीन लाईट रहते हैं । डेन्जर स्थान पर रेड लाईट रहते हैं । इससे उसका पायलट उतनी ही तकेदारी रखता है कि, पायलट के दुर्लक्ष्य से अथवा मशीन की कमतरता के कारण यदी यह एरोप्लेन उसकी हवाई रेखा छोड़कर बाहर चला जाय तो भयंकर

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya shri Sumanrajisuriswarji Jain Tatvagyanshala

अकस्मात और जल उठने की बारी लगी है, इसकी ज्यादा घबराहट तो उतारुओं को रहता है। कारण की यह समय उनके लिए कटोकटी का रहता है और जीवन मृत्यु के बिच में संघर्ष चलता रहता है।

ऐसी ही परिस्थिति जीवनरूपी एरोप्लेन की हैं। नीति-न्याय-सदाचार यह उसकी हवाई पट्टी हैं। जीव पायलट (चालक) हैं। धर्म हवाई रेखा की दोनों तरफ की ग्रीन लाईट हैं। डेन्जर स्थान पर धर्मगुरु के रूप में रेड लाईट हैं।

पायलट रूपी जीव के बेदरकारी अथवा जीवन रूपी एरोप्लेन मशीन में मामुली कमतरता आने के साथ ही भयंकर अकस्मात दुर्घटना होती हैं।

इसलिए ही रेखा के रहस्य को जानकर समतोलता छोडे बिना जीवन को नवजीवन बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे तभी लक्ष्य को सिद्ध कर सकेंगे।

> जिस जीवन की इमारत सत्य, सदाचार नीति और धर्म की फौलादी भित्ती पर उठाई गई हो वह भयंकर झंझावात में भी विनष्ट नहीं होती।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

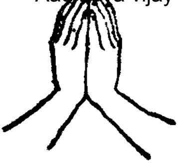

समर्पण

मेवाड की भूमिपर महाराणा प्रताप के कीर्ति का सूरज सहस्त्र किरणों से चमक रहा था। उनके महान गुणों के कारण एक-एक प्रजाजन के हृदय में प्रताप समाये हुये थे।

सत्यता उनके कण-कण में बसी हुयी थी।

स्वाधिन होते हुये भी विलासी जीवन का अंश भी देखने को न मिलता था। ऐसे महाराणा प्रताप भारी साहसिक और वीर व्यक्ति थे।

समय आने पर खुद समरांगण में कुद पडे ऐसे वीर थे।

खुद महाराजा भूमाता के लिये मरमिटने की तैयारी वाले, सत्यकी पगडंडी पर चलनेवाले हो तो राज्य के मंत्री, सामंत और अधिकारी की भावना शुद्ध और राजा का अनुकरण करनेवाली हो यह स्वाभाविक है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
राजा प्रताप के एक मंत्री थे। भामाशा उनका नाम था। वंश परंपरा से मंत्रीपद को धारण करने वाले थे। राज्य की सेवा करते-करते भामाशा के बाल सफेद हो चुके थे। दूध जैसी दाढी और नोंकदार मुंछे थी, वृद्धावस्था के दर्शन होते न थे, विशाल भाल और चमकदार आँख जवानों को शरमींदा करे ऐसी लगती थी। बुद्धि के बादशाह और शक्ति के सागर, भामाशा की महाराणा प्रताप जीतना ही लोकप्रियता थी।

लोगों के दुःख दर्द की बात भामाशा के कानपर आती तो प्रजा के दुःख दर्द को दूर करके ही उनको चैन मिलता।

भामाशा के वंश परंपरा से उनके पूर्वज मंत्री पद को संभालते आये थे। भामाशा के पिताजी भारमलजी राजा उदयसिंह के मंत्री थे। बातबात में प्रजा भामाशा को याद करती थी। राणा प्रताप भी भामाशा को पुछने के बाद ही कोई भी कार्य करते। उनकी अतुल देशभक्ति नीतिमत्ता के कारण उनपर विश्वास था।

दिल्ली के शाहेनशाह बादशाह अकबर के साथ राणा प्रताप का वैर था। बादशाह अकबर का लश्कर

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
इतना बलवान था कि बड़ेबड़े राजाओं को जीत कर उनके राज्य को दिल्ही के हाथतले ले लिया था। हर एक राज्य में खुदके मंत्रीओं को रख दिया था। कोई राजा उनकी आज्ञा के नीचे रहने के लिये कहता तो उसको उसका राज्य सोंप दिया जाता था। परंतु भाग्य से ही कोई सत्तालालची राजा बादशाह की हुकमत के नीचे रहने का सोचता था।

लगभग सभी राज्यों को जीत लेने के बाद भी खुद के कब्जे में राणा प्रतापसिंह न आने के कारण पैरों में चुभे हुये कांटो के समान बादशाह को राणा प्रताप चुक रहे थे। और किस तरह से राणा प्रताप को जीतने के लिए व्युह रचना दावपेच रचाता था।

मेवाड में चितोड गढ़ का किला इतना तो अतुल और प्रख्यात था कि उसके पतन की इच्छा करनेवाले खुद पतन के गढ्मे गीरते।

लेकिन ...बादशाह के दरियाअ लष्करने राणा प्रताप के पिता के पास से वह किला छिन लिया था।

किले को वापस मिलाने के लिये राणा प्रताप ने दृढ प्रतिज्ञा की थी जबतक किले को वापस न मिलालुं

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

तबतक ब्रह्मचर्य का पालन करना। घास की शय्या पर सोना, पत्तालों में भोजन करना। दाढी करवाना नहीं। कितनी कडक प्रतिज्ञा ?

भामाशा कहने लगे अपने राजा एसी प्रतिज्ञा करे तब हम सुख से कैसे रह सकते ? और जहाँ भामाशाने राणा प्रताप के पिछे प्रयाण किया तब क्या ? प्रजा उनका चेहरा देखती बैठी रहे ? सभी तप तपने बैठ गये।

दुसरी ओर कुछ उलटा ही बन रहा था मेवाड़ को जितने के लिये राणा प्रताप की ताकद को तोडने बादशाह ने ठेठ दिल्ली से लष्कर रवाना किया लष्कर को देखनेवाले तो एसा ही समजते थे कि ये लष्कर है या सागर की बाढ।

लष्करों में सर्वप्रथम अभंग एसी गजसेना, उसके पीछे उंटसेना, अश्वसेना उसके बाद पायदल।

लष्करों का मुख्य सेनापति बादशाह का पुत्र सलीम था। साथ में खुंखार योद्धा मानसिंह को भी भेज दिया था। राणा प्रताप के गुप्तचरोंने राज्य के ऊपर आ रहे संकट के समाचार मंत्री भामाशा को दिये।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

भामाशा तो तुरन्त ही घोड़ेपर सवार होकर राणाजी के पास पहुँच गये और बोले, राणाजी ! संकट के बादल घिर रहे हैं । पूर्णरूप से तैयार रहना में । कमर में कटार, हाथ में तलवार ले के तैयार रहो । नमन करने के बाद भामाशा बोल उठे ।

भामाशा ? इसमें पुछने की क्या बात है ? अपने लश्कर को तैयार करो. देश में जाहिर करो कि भूमाता की रक्षा के लिये मर मिटने को तैयार हो । जिसके हृदय में सच्ची देशभक्ति हो वह हाथ में हथियार लेकर शत्रुओं का संहार करने को तैयार हो जाय और राजमहल के आंगण में हाजिर हो जाय ।

तबड़ाक...तबड़ाक तबड़ाक भामाशाने राज-महल से घोडा दौडाया । रास्ते में घोड़ेपर सवार और मार...मार...दौड़ते हुये भामाशा को देखकर लोग आश्चर्य चकित हो गये । वाह ! वाह ! जवानो को भी हरा दे ऐसी उनकी अश्व सवारी थी ।

भामाशा सेना के दुसरे अलग अलग टुकडीओं के सेनापतिओं को मिले युद्ध की तैयारी करके अपने अपने घर गये ।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay Shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
आदेश मिलते ही [illegible] नगर [illegible] को गया। नगर के शूर वीर भी जाहिरात सुनते ही बीस हजार की संख्या में राजमहल के आंगण में जमा हो गये।

जब खुद महाराणा और भामाशा जैसे व्यक्ति हाथों में हथियार ले निकल पडे तब नगर के लश्करी सैनिकों में नगर के दुसरे शूर वीरों में तेज चडे यह स्वाभाविक है।

महाराणा प्रताप महलों से निकल पड़े परंतु क्या उनका वेष! शरीर पर फौलादी चिलखत, हाथ में नोकदार भाला, कमर में दो दो तलवार ऐसे चमकदार अश्वपर आरूढ हुये थे। तब दुसरी तरफ भामाशा का पहराव महाराण राणा प्रताप को फिका कर रहा था। पूरा शरीर लश्करों से लदा हुया था। हाथ में बिजली की भांती चमकने वाली तलवार थी। और दुसरे हाथ में फौलादी ढाल आंखों में शौर्य झलक रहा था। बुढे थे फिर भी बाहों में गजब की शक्ति थी।

महाराणा ने सेना के बिच में आकर घोषणा किया "मेरे प्रिय प्रजाजनों! बहादुर सैनिकों! आज शत्रुने हमको लडने को मजबुर किया है। और हम देश की स्वतंत्रता के खातिर पूरे जोर से लडेंगे। परंतु उनके

www.jaintatvagyanshala.org

ताबे में हरगिज नहीं आयेंगे। हमें किसी के राजपाट की जरुरत नहीं है। और नहीं किसी के गुलाम होने की आवश्यकता है। भूमाता के लिये आखरी दम तक लडना है।

मातृभूमि की जय! महाराणा प्रताप की जय! वीर भामाशा की जय! राणाजी की घोषणा पूर्ण होते ही तालीओं के गडगडाहट के साथ जय, जय शब्दों से आसमान गुंज उठा।

नगाडे की आवाज होने के साथ ही लष्करों की कूच शुरु हो गयी। सैन्यों के आगे महाराणा प्रताप और भामाशा चल रहे थे।

हलदीघाट के रणमैदान में बादशाह और महाराणा के सैनिक आमने सामने आ गये। जोरदार युद्ध चल रहा था। आमने सामने तलवार चमक रही थी। भाले से भाला टकरा रहा था। दोनों सेना के सैनिक एक दूसरे के हाथों से कटकर गिरने लगे। किसीके हाथ तो किसीके पैर और किसीके धड़ कटकटकर उडने लगे, मुर्दों का ढेर जमा होने लगा। सैनिकों के चित्कार हृदय को चीर डाले ऐसी निकल कर वापीस विलीन हो रही थी। ऐसा भयंकर दृश्य जम गया था कि नजर से देखनेवालों का हृदय रुक जाय।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay Shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

तब दूसरी तरफ भामाशा का रंग कुछ और ही था। सैनिकों के वीच में तलवार के साथ साथ खुद भी घुम रहे थे। तलवार से एकएक शत्रु को मार-मार कर फेंक रहे थे। राणाजी ने घोड़े को एडी लगायी और घोड़ा सीधा सीधा सलीम के पास आ गया। हाथी के उपर बैठे हुये सलीम पर राणाजी ने बिजली के बेग से जोरदार घाव किया. समय सुचकता से शाहजादा लोहे की अंबारीके निचे झूक गया और बच भी गया। परंतु ··भाले के तिक्ष्ण नोंक से महावत मर गया।

फिर तो बादशाह के लश्करों ने धुम मचा दी। राणा की सेनापर ऐसे टुट पड़े कि, संख्याबद्ध सैनिकोंका चुरा कर डाला। और खुद राणाजी को घेर लिया।

मोगल सेना के सामने मेवाडी सेना भी इतने ही जोर से लड़ रही थी। लेकिन मोगलो की विराट सेना के सामने राणाजी की इनीगनी सेना कब तक टिकेगी।

राणाजी को घिरे हुये देखकर उनको सहीसलामत छुड़ाने के लिये मेवाडी सेना राणाजी के तरफ एक साथ टुट पडी। उनके जोरदार हमले को देखकर मोगल

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

सेना हट गयी। मेवाड़ी सेना ने खुद के स्वामि को भाग जाने को कहा। परंतु राणाजी किस तरह भागे? आखिर में राणाजी को सलामत रखने के लिये सैन्यने बहार धकेल दिया। राणाजी और भामाशा दौड़ते हुये घोड़े पर बैठकर राजमहल में आ गये। महल से भामाशा राणाजी, राणाजी की पत्नी, बालक का छोटासा परिवार पर्वतो में अदृश्य हो गये।

स्वामी के बचने से उनकी सेना को आनंद हो रहा था। समय के बाद स्वामी वापीस मिलेंगे ऐसी आशा भी थी।

रणमैदान में जहाँ वहाँ मुर्दे और खुन की नदीयाँ वह रही थी। मुर्दे द्वारा पेट भरने के लिये आकाश में गीदड़ के झुंड और कौवे घिरे हुये थे।

मोगल सेना की जीत हुई। मेवाडी सेना में भाग दौड़ हुई। राणा प्रताप जीवित होने से उनको पकडने के लिये मोगल सेना के सैनिक निकल पड़े। परंतु... राणाजी हाथ में न आये।

पहाड़ों में धुमते घुमते राणाजी की परिस्थिति भयंकर होने लगी। कभी भी मखमल की गादी के

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

नीचे पांव न रखनेवाले राणाजी को आज कांटे और कंकरी से भरे हुये रास्ते पर चलने से पांव से खुन बह रह था। हमेंशा भोजन के बत्तीस पकवान और तेहतीस साग के बदले रोटी भी दुर्लभ बन गयी थी... तभी मां...! भूख लगी है, मां ! प्यास लगी है, मां...! ठंडी लग रही है, मां धूप लग रही है। इस प्रकार के आक्रंदसे राजबालक की स्थिती दयाजनक थी। उपर आकाश और निचे धरती के शिवाय कुछ भी न था।

वाह...कुदरत ? राजा को रंक और रंक को राजा बनाने की शक्ति गजब की है। कहां ! हृदय को आनन्द देनेवाली शहनाई की मधुर ध्वनि और कहां ! हृदय की धड़कन बंद कर देनेवाली जंगली पशुओं की भयानक ध्वनि।

एक दिन की बात है। दो-दो दिनसे राणा राणी मां भूखे थे। जुवार की रुखी एक रोटी बच्चों के लिये रखी हुई थी। वह रोटी रात को कोई जंगली जानवर ले गया था। भूखे बालकों का रुदन देखकर राणाजी का हृदय भर आया।

देश के जातभाई अकबर की आज्ञा धारण कर

Acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
खीर खाजे खा रहे थे । मौज मजा उड़ा रहे थे । और अपने लिये ऐसे दुःख के दिन ? हे प्रभु, यह तो धर्मी के घर ही धाड पडी ? राणीमा ने एक गहरा निःश्वास लिया ।

छोटा राजकुटुम्ब जहां आश्रय लेकर बैठा हुआ था वहां अचानक फिरते-फिरते बादशाह का दूत आ पहुँचा । लगाम खिंचकर घोड़ा खड़ा किया । नीचे उतर कर थोडी देर से बोला ।

मेवाड के राणाजी ! ऐसे जंगलों में भूखे प्यासे भटकना छोड़ना हो, राजपाट मिलाना हो, दिल्ली के दरबार में उंचा स्थान मिलाना हो तो बादशाह की आज्ञा स्वीकार लो और सुखी हो जावो ।

मेरु पर्वत विचलित हो जायगा परन्तु राणा प्रताप विचलित नहीं हुये । बादशाह के छत्र के नीचे जाकर बापदादा के कुल को कलंक लगाऊं ? बहन, बेटी को खुद के हाथों से शैतान के हाथों में सोंप दूं ? नही... नही हरगिज नही !

जीवन खत्म हो जाय तो भी पर्वा नही परन्तु . बादशाह का गुलाम तो कदापि नहिं बनुं ! राणा प्रताप

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
की आत्मा बोल उठी । राणाजी ने दूत की आज्ञा स्वीकारने की साफ ना कर दी थी। दूत भी चला गया।

थोड़े ही दिनों में मोगलसेना के गुप्त सैनिक राणाजी को धर पकड़ने के लिये रवाना हो गये। राणाजी के विश्राम स्थान तक पहुँचे उस से पहले राणाजी परिवार सहित दुसरे स्थान में चले गये।

मातृभूमि की स्वतंत्रता अभी अशक्य है। और बादशाह के दास बनकर जीना नही, बादशाह की आज्ञा बगैर यहाँ पर जीना मुश्किल है। यह सोचकर सिंघ के उसपार जाकर रहने का विचार किया।

सिंघ रण के उसपार जाने की तैयारी कर रहे थे। तभी धूल उड़ाते एक घोड़ेसवार आ पहुँचा। घोड़े से उतरकर राणाजी के पैरों में गीर पड़ा।

भामाशा! मेवाड के भाग्य बदलने की शक्ति मुझमें नही, स्वतंत्रता मिलना मुश्किल है। इसलिये हम सिंघ रण के उसपार जा रहे थे, राणाजी बोले।

खुद के मालिक की यह दशा, मातृभूमि को छोड़-कर चले जाने की बात सुनकर भामाशा रो पड़े और बोलने लगे स्वामिन! भूमाता को छोड़कर चले जाओगे?

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
रजपुताई को कलंक लग जायेगा, क्षत्रिय का खमिर खत्म हो जायेगा।

इलाज नही भामाशा। अपने पास नही सैन्य, नही शस्त्र सरंजाम सेना शस्त्र तैयार करने के लिये नही फुटीकौड़ी।

महाराज ! धन की ही जरुरत हैं न ? मेरा सभी धन आपका है। बाप दादा से एकत्रित किया हुआ अनगिनत धन मेरे पास गुप्त है। वह धन जो इस समय काम में नही लाया तो उसकी किमत धुल और मिट्टी के समान हैं। आप कहे तो इस नश्वर देह की चमड़ी के जुते बनाकर आपको दे दू मेरा तन-मन-धन आपके नामपर कुर्बान है। परन्तु मेवाड को अनाथ करना नही, भामाशा राणाजी को बोल रहे थे। बोलने में एक-एक शब्द में वेदना फुट रही थी।

धन कितना है उसका अंदाज तो होगा न ? मंत्रीराज ? राणा प्रतापने पूछा। राजन ! पचीस हजार का सैन्य खड़ा किया और उस पचीस हजार सैन्य को बारा साल तक सभी तरह की चिजें दे सके इतना धन है। इसलिये सैन्य तैयार करके देश को गुलामी से मुक्त करेंगे।

नहीं नहीं प्रजा का धन मुझसे न लिया जायेगा। प्रजा को देता है, प्रजा के पास से लेता नही। राणाजीने मन की बात कह दी। देश की स्वतंत्रता के खातीर मै धन सौंप दे रहा हुँ, इस में आपको अपने लिये वापरने की बात ही कहाँ हैं, मेरा सर्वस्व आपके चरण में समर्पित करता हुँ, भामाशाने दृढ स्वर में कहा।

धन्य भामाशा धन्य, धन्य हैं तुम्हारी उदारता को धन्य है तुम्हारी देशप्रेम को, तुमने जैन धर्म का और कुल का नाम उज्वल किया है, तुम्हारे जैसी व्यक्ति, मेरे राज्य में है इसलिये मैं गर्व अनुभव करता हुँ। मेवाड के उद्धार के यश की महिमा तुम्हारे सर रहेगी चलो, करो तैयारी, सैन्य तैयार करो, परन्तु उनका व्यूह तुम्हारे हाथ में रहेगा।

और उसी दिन से जोरदार तैयारी शुरु हो गई। राणाजी और भामाशा की आज्ञा मिलते ही गाँव गाँवमें से फटाफट जवानी से नितरते वीर राजपुत कमर कसने को तैयार हो गये। वृद्ध भी टट्टार बन गये। मोगलों के चुंगल से छुटने की सभी की भावना थी। देखते देखते विशाल सैन्य तैयार हो गया। शस्त्र चमचकाट होने लगे। राजपुत मुंछोपर ताव दे रहे थे।

---

www.jaintatvagyanshala.org

वृद्ध भामाशा का अभी का स्वरूप अनोखा था।
Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
आँखों में शौर्य नितर रहा था। देखने वालों को ऐसा ही लग रहा था कि इस युद्ध में शत्रु का जोरदार संहार होगा और सचमें हुआ।

एक दिन भामाशा का सैन्य मोगल सेना के सैन्य पर इस तरह टुट पडा कि, मोगल सेना डगमगा गयी भामाशा मेवाड के एकके बाद एक किले का काबीज करने लगे। परन्तु देलवाड में खुनखार जंग जम पडा। हाथोहाथ लड़ाई शुरु हो गई। मोगल सेना के सरदार बाज-पक्षी जैसे शाहाबाज खाँ और वृद्ध भामाशा का द्वन्द युद्ध भारी था। और समय देख कर वृद्ध भामाशाने तलवार के एक ही झटके से शाहबाज खाँ का हाथ उडा दिया। हाथ कटते ही शाहबाज खाँ जान लेकर भाग खडा हुआ। सरदार के भग जानेसे मोगल सेना में भाग दौड़ शुरू हो गयी। मेवाड के चितोड, अजमेर, मांडवगढ, सिवाय सभी भूमि स्वतंत्र हो गई। तीन किले बादशाहके काबू में रहे। लड़ाई समाप्त हुई।

दरबार आखरी तक भरा हुआ था। राणा प्रताप सिंहासन पर विराजमान थे। पास में भामाशा खडे थे।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay Shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

देश की रक्षा के खातिर युद्ध में मृत्यु पाये वीरों को श्रद्धांजली दी और अन्य वीरों को योग्य पुरस्कार दिया।

भामाशा के गुण गाते हुये राणाजी कहने लगे, भामाशा की देशभक्ति सचमें अजोड हैं। उनके तन-मन-धन के योग से ही देश स्वतंत्र हुआ है। इसका संपूर्ण श्रेय भामाशा का है। ऐसे नवरत्न अपने राज्य में है, यह अपना सद्भाग्य है।

और तालीओं की आवाज के साथ सब बोल उठे धन्य भामाशा धन्य आपकी देशभक्ति, धन मिलाया भी और खर्च भी कर डाला।

राजा रंक बना हुये राणा फिरसे राजा बने, प्रजा का न्याय नीतिपूर्वक पालन किया।

भामाशाने जीवन के अंत तक देशभक्ति करके जीवन यशस्वी बनाया

ऐसी देशभक्ति जहाँ हो, उस देशपर संकट कभी नहि आते और अगर आते भी है तो संकटों के खुद मुश्कील पड जाती है।

> काया सुख भोग के लिए नही किन्तु आत्म साधना के लिए है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

प्रारब्ध

उस वक्त माणेकचंद शेठ गांव में सुखी व्यक्तिओं में गिने जाते थे। उनके पुत्र मोतीचंद लिखने-पढ़ने में जितना पढ़कर बेपार में लग गया था। परन्तु था बुद्धि का बादशाह।

एक दिन माणेकचंद शेठ व्यापार के हेतु से किराना माल के वाहन भरकर जावा बंदर पे गये। और वाहनों पर लंगर डलवाये।

जावा बंदर का रहिवासी अच्छा खासा प्रतिष्ठित व्यापारी हीराचंद शेठ उन्हें अपने यहाँ बुलाने के लिये आमंत्रण देने गये। नौकर चाकरों के मदद से माणेकचंद शेठ का सब माल खुद वाहनों में भरवा दिया और धीरे-धीरे माल बेचकर अच्छा नफा मिला दिया।

माणेकचंद शेठ अपने वतन में जिस माल की जरूरत थी वह माल खरीद कर स्वदेश वापिस आ गये।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijayshri Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

भाग्यचक्र हरदम एकसा नहीं चलता । धूप के बाद छांव, रात के बाद दिन ऐसी नैसर्गिग घटमाळा चलती ही रहती है।

माणेकचंद शेठ के भाग्य ने पलटा खाया । और सभी द्रव्य नाश हो गया । कल का लखपती आज का खाकपती हो गया । नौकर चाकरों ने आखरी सलामी दे दी । गहने, आभूषण, जायदाद सभी खत्म हो गया । ऐसा करूण आघात शेठ सहन न कर सके और थोडे ही समय में स्वर्गवासी बन गये। उनके पुत्र मोतीचंद पर सारा भार आ पडा । आज उसे उपर आसमान और निचे धरती के अलावा अन्य कोई सहारा न था ।

माणेकचंद शेठ ने मोतीचंद की बचपन में ही सगाई कर दी थी । उससे मोतीचंद की शादी उस कन्या के साथ हुई । मोतीचंद की परिस्थिति इतनी बिकट बन गई थी कि एक तरफ कंगाल जीवन और दुसरी तरफ कुटुंब के पालन पोषण का भार ।

मोतीचंद ने एकदिन अपने माताजी से जावा बंदर जाकर नसीब अजमाने की अनुमती मांगी । और माताने भी शुभाशिर्षाद पूर्वक रजा दे दी।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Shri Vijay Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

जिन के पास से जितने उधार पैसे मिले उतने जमा करके बापके भंगार हो गये वाहनों को दुरूस्त करवाये। और अच्छा दिन देखकर व्यापार के हेतु से प्रयाण किया।

सागर का सफर करते करते वाहन जावा बंदर पे आ पहुँचे। हीराचंद शेठ नये बेपारी के सामने आये, उन्होंने पुछा कौन से नगर से आ रहे हो? मोतीचंद शेठने गांव का नाम बतलाया। हीराचंद शेठने सवाल किया तब तो तुम्हारे गांव के प्रतिष्ठित व्यापारी माणेकचंद शेठ को पहचानते होंगे।

मेरे पिताजी का इस शेठ से कुछ लेना देना नहि ऐसी खात्री करके उसने कहा वो तो मेरे पिताजी थे।

माणेकचंद शेठ के पुत्र हो? वाह ..वाह बहुत सुंदर और अति मानपूर्वक मोतीचंद को अपने घर ले गये। उसका सारा माल अच्छे नफे से हीराचंद शेठ बेच दिया। एक दिन मोतीचंद सागर के किनारे घुमने गये। वहां मिठु नाम का एक खारवा रहता था। वो सागर में डुबकी लगाकर दो घंटे तक सागर में रह सकता था। वो डुबकी के हजार सोना मोहर लेता था। मोतीचंदने मोती मिलाने के हिसाब से

www.jaintatvagyanshala.org

दस डुबकीयाँ लगायी। परंतु सिप के अलावा हाथ में कुछ नही आया। इसलिए मोतिचंद खुब उदास बन गये। यह देखकर मिठु को मोतीचंद पर दया आयी। उसने कहा शेठ तुम्हारा खातीर मै एक डुबकी मुफ्त लगाउंगा।

मिठु डुबकी लगाकर सागर के लहरों को हटाते ठेठ निचे तक पहुँच गया। और निचे बैठे हुये एक महाकाय नाग के सिर के निचे तथा पुछ के निचे दो नर-मादा मोती दिखे। वह देखकर वो उपर आ गया।

"शेठ तुम्हारा भाग्य तो पूर्ण रुप से खिला हुआ है। अमुल्य मोती देखकर आया हूं। परन्तु यह काम मृत्यु के साथ गले मिलने जैसा है। बिगर मांगे मौत मिले वैसा है। फिर भी उन्हे मिलाने के लिए मेरे से बने उतने प्रयत्न करुंगा।" उसने मिट्टी की दो मजबुत सिपें बनाकर दोनों का साथ लेकर वापस अफाट सागर में अदृश्य हो गया। अचानक सागर में जबरदस्त तुफान आया और साप उछलकर दूर पड़ा। साप के गैरहाजरी का लाभ लेकर दोनों मोती उठाकर उसकी जगह मिट्टी की सिप रखकर अत्यंत वेग से मिठु उपर आ गया और मोतीचन्द शेठ को जलदी वाहन चलाने को कहा।

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

वाहन पूर्ण वेग से चल रहा था। पिछे से भयानक नागराज क्रोधावेश में पानी के रेंले के जैसे आ रहे थे। इतने में सामने दोनों तरफ खड़क की धार नजीक आ रही है। यदी वाहन उसके साथ टकराये तो टूटकर चुरा हो जायेगा। इसलिए वाहन का सुकान मुझे दो मिठु ने कहा।

वाहन का सुकान हाथ में लेकर मिठु ने सहीसलामत पार उतारा। पिछे आया हुआ सांप क्रोधावेश में भान भूल गया और पर्वत की धार के साथ पानी से टकराकर मर गया।

मोतीचन्द कुशलता पूर्वक जावा बंदर पे आ गये। मिठु को मुंह मांगा इनाम दिया। नर मोती हजारों की किमत में जवेरी को बेचा और रात को यह वापस मादा मोती के पास आ जाता था। उससे मोतीचन्द शेठ धनवान हो गये।

नर मादा मोती के प्रभाव से खुब धन मिलने के कारण खारवा लोग शेठ को मार डालकर धन हडपने का विचार करने लगे। इस बात की गंध हीराचन्द शेठ को मिला और मोतीचन्द को बचाने के खातीर उसको जल्दी से भेजने का विचार किया।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

वाहन तैयार करावे कागज वगैरे देकर खारवाओ को वाहन बुलाने की आज्ञा दी। खारवा शेठ को साथ लेने का खुब प्रयत्न किया। परंतु सब निष्फल।

सागर की सफर करके वाहन मोतीचन्द के गांव आ पहुँचे। सारा माल गोदामों में भर दिया।

हीराचन्द शेठ ने नर-मादा मोती मोतीचन्द के पैर के पिंडलियों में जमा दिये जिसमें लुटने का भय न रहे। साथ ही मोतीचन्द के साथ भेजने के लिये साथीदार ढूंढने लगे। और थोडे ही दिनों में सोबत मिल गई। मोतीचन्द शेठ के गांव का जमादार एकावन घोडे सवारी के साथ जाने वाला था। उसके साथ मोतीचन्द को भेजने का निश्चय किया। और कहाँ रस्ते में धुताराओं का गांव आता है. इसीलिए संभल के जाना। जमादार को भी सुचित किया गया कि तुम भी तुम्हारे से उनको अलग करना नहि।

मजल-दरमजल करते पंथ को काटते वे धुताराओंके गांव के नजीक आ पहुँचे। ईस गाँव में रतिलाल नाम के धुतारे की पुत्री मदनमंजरी ज्योतिष्य की जानकार थी। उसको खबर मिली की नर-मादा मोती पाँव के

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
पिछली में कुपाकार एक आदमी आ रहा है । यह बात उसने अपने पिताजी से कही ।

रतिलाल थोडे धुतारों को साथ लेकर जमादार के पड़ाल में गयें । वहाँ सबको चाय-नाश्ता करवाया और खुदका जाल बिछाना शुरू किया ।

रतिलाल ने कहा ' जमादार यह मोतीचंद हमारे जीजाजी हैं । बचपन में मेरे पुत्री के साथ उसका विवाह हुआ था । कन्या अब बड़ी हो गयी है । इसलिए हमारे घर में अब उसे कब तक रखना ।

फौजदार तो आश्चर्यचकित हो गये और मोतीचंद को वहीं छोड़कर आगे प्रयाण किया ।

रतिलाल मोतीचंद को गाँव में खुद के घर ले गये । जोरदार स्वागत किया । और सुन्दर सजाकर सुशोभित किये हुये कमरे में ले गये । उनको वहाँ ठहराया । उस कमरे में गादीयों से युक्त पलंग था । स्वाभाविक उसने गादी ऊंची की और वह घबरा गया ।

पलंग के उपर कच्चे सूत का बंधन था । और नीचे घटादार अन्धेरा था । वह बहुत ही घबरा गया । एकान्त में खुब रोया' और आखरी में खोली के कोने में जाकर बैठ गया ।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

थोडी देर में आभूषणों से सज्ज होकर हाथ में मिठाई का थाल लेकर मदनमंजरी आयी और बोली "स्वामिनाथ, इस तरह कोने में क्यों बैठे हो ? क्या हमारे आतिथ्य सत्कार में कुछ कमतरता रह गई है, जिससे आपको दु:ख हुआ है ? पधारो प्रिय इस पलंग पर हम आराम से बैठेंगे।

मोतीचंद को कपट की खबर पड़ गयी थी। कि यह मुझे पलंग पर बैठाकर अंधेरे कुँए में धकेल देना चाहती है। वह बोला 'प्रिया, मेरी प्रतिज्ञा है कि, स्त्री के भोजन के बाद भोजन करूंगा उसी तरह इस पलंग पर तेरे बैठने के पहले मै किस तरह बैठ सकता हुँ ?' मोतीचंद के आग्रह से मदनमंजरी पलंग के किनारे पर बैठी। समय देखकर मोतीचंद ने धीरेसे धक्का मारा और कच्चे सूत के धागे छूटकर तुट गये। और साथ में मदनमंजरी अन्धारे कुँए में गिर पड़ी।

मोतीचंद ने विचार किया। अब यदि यह गड्डे में से चिल्लायी तो सब जमा होंगे और मेरे छिलके-छिलके निकल जायेंगे। इसलिए सिर से पगड़ी उतार कर उसकी एक किनार खिड़की से बांधकर निचे उतर गया। और अन्धेरे में पूर्ण वेग से घोड़ा दौड़ा दिया।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

इस तरह थोडी देर बाद धुतारे को खबर मिलते ही मदनमंजरी को सांढवी के उपर बैठाकर उसका पिछा किया। मोतीचंद बिना रुके घोडे को दौड़ाते हुये एक शहर के द्वार आ पहुँचा दरवाजे के पहरेदार द्वारपाल को कहा कि, 'मेरी आप रक्षा करो और संपूर्ण आत्मकथा जाने बिना मुझे उन ढंगारो को सौपना मत' द्वारपाल ने मोतीचंद की बात कबुल कर ली। तभी ठगो की टोळी वहाँ आ पहुँची द्वारपाल को कहा कि. थोडी देर पहले आये हुये स्वार को हमको सौप दो।

द्वारपाल ने जब साफ ना कह दी, तब ठगी ने उस घोडेस्वार के साथ मदनमंजरी को रखने के लिए कहा। द्वारपाल ने यह बात मोतीचंद को पुछी और उसके हा कहने पर उसको हा कह दी।

दरवाजे के पास ही एक रुम था। उस रुम में दोनो साथ रहते थे। मदनमंजरी मोतीचंद की सभी तरह से सेवा करती थी। परन्तु मोतीचंद उससे बिलकुल विश्वास न करता था।

पूर्व संकेत के अनुसार हमेंशा सवेरे एक साधु आकर आटा देकर बातचीत कर के चला जाता था।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

एक दिन दरबान के रिश्ते में खाने का आयोजन था, उससे दोनों दरवान साथमें ही भोजन करने गये। कारण उसका नियम था कि सभी ने एक साथ में एक ही पंगत में खाना लेना चाहिए।

इस अवसर का लाभ लेने के लिए मदनमंजरी ने भोजन वगैरे करके मदनमंजरी प्यार से कहने लगी, 'स्वामिनाथ, आज सिर में तेल लगाकर मगज को हल्का फुल बना दुं, कर्मयोग से मोतीचंद फस गया। और हा, कह दां।

मदनमंजरी ने ऐसे तरह का तेल घस के सिर में लगाया कि मोतीचंद जल्दी ही सो गया। और सोये हुये मोतीचंद के छातीपर खुली तलवार लेकर मदन-मंजरी चढ़ बैठी और बोली प्राणनाथ परमेश्वर का स्मरण कर लो। इस देह से आपके प्राण पलभर में पलायन हो जायेंगे।

भय से चिखने के वजाय मोतीचंद खिल खिलाकर हंस पड़ा तब मदनमंजरी ने ऐसे समय पर शोक करने के वजाय हसने का कारण पुछा। कुछ नही तू तेरा काम करती जा। मोतीचंद ने कहा। नहि·· नहि आपको हंसने का कारण बताना ही होगा।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
मदनमंजरी ने कहा तब मोतीचन्द ने कहा रे तुने अभी तक कितनों की जान ली होंगी। परंतु भुलना मत कि तेरे को चार के उपर पाँचवा नरियल कोई नहि बांधेगा। मोतीचन्द ने इतनी कुशलता पूर्वक मदनमंजरी को बातों में लगा दिया कि मारनेका काम दूर हो गया। इतनी देर में दोनों द्वारपाल खाना खाकर आ गये, और वह तो इस दृश्य को देखकर पुतले जसे हो गये। और तुरंत ही डंडा लेकर मदनमंजरी को मारने के लिए दौड़ पड़े परंतु मोतीचन्द ने दोनों द्वारपाल को मारने से रोक दिया। खुद का कपट खुल जाने से मदनमंजरी खुब पछतावा करने लगी। साथ ही कौन जाने कैसे उसके हृदय का परिवर्तन हो गया, कि, वह पिछे किये हुये दृष्टी कृत्य करने के कारण पश्चाताप के आंसु बहाने लगी।

मोतीचन्द से कहने लगी, सच में आज आपने मुझे सच्ची दृष्टी दी है। असली दिशा सुझाई है। और आज से तुम मेरे जीवन के साथी स्वामी हो। और मै आपकी पत्नी बनकर जीवन बीताने की प्रतिज्ञा करती हुँ।

सांढवी पर बैठकर मदनमंजरी दरवान को खुश

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

कराके दोनों पुरुष के वेष में आ पहुँचे। मदनमंजरी को गाँव बाहर एक मालन के घर रखा, और कहा, आने वाले कल को तुझे धामधूम पूर्वक लेने आऊंगा।

मोतीचन्द घर आया इसलिए मिलने को आने के लिए रिश्तेदारों की बारात उतर पड़ी। सबको आदर-सम्मान के साथ भोजन कराके रवाने किये।

स्नान करते समय मोतीचन्द ने पाँव के पिंडलीयों में नर-मादा मोती निकाल लिए। डब्बी में रखकर प्रथम पत्नि को सौंप दिये। परंतु बाद में काम के अन्दर डब्बी लेना भूल गये। बाद में घटना कुछ ऐसी घटी कि, एक जवेरी के यहाँ कोई मर गया था। मोतीचन्द की पत्नी उसके यहाँ बैठने गयी उस वक्त जवेरी के पत्नी ने उससे पुछा कि, तेरा पति बहोत समय बाद परदेश से लौटा है। इसलिए तेरे लिए कुछ अच्छी सी चीज तो लाये ही होंगे।

भोली-भाली मोतीचन्द की पत्नी ने नर मादा मोती की सारी बात बता दी, और कहा देख, यह दो मोती लायें हैं।

जवेरी की पत्नी मोती पारखु थी। उसने अमूल्य दो मोती देखकर आश्चर्यचकित बन गयी और दोनों

Aacharya vijay shri Suhendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
मांगी किसी तरह भी ले लेने को मन ललचा गया। उसने खुद की मोती की डब्बी खोलकर कहा, ला देख हम दोनों के मिलाकर देखेंगे। इस तरह हाथ की सफाई से उसने जादुइ मोती बदल दिये कि उस बेचारी को इस बात की गंध तक न आयी। जब थोडी देर बैठकर वह घर वापस लौटो तो मोतीचन्द ने मोती की डब्बी मांग ली। परंतु यह क्या? डब्बो खोलने के साथ मुर्छा जाकर जमीन पर गिर पड़ता है, बहोत उपचार करने के बाद भी अच्छा होता नहि।

इस तरफ मालन के यहाँ रही हुई मदनमंजरी सोचती है कि मेरे स्वामिनाथ मुझे आनेवाले कल को लेने आऊंगा ऐसा कहकर गये थे। फिर भी आज दो-दो दिन होने के बाद भी आये क्यों नही? उसने मालन को वहाँ भेजकर समाचार जान लिए। ज्योतिष के दाव फेंककर जवेरी के पत्नी से वह नर-मादा मोती ले लिया है। यह जान लिया फिर जलदी ही राज रानी का स्वांग रचाकर भाड़े की गाड़ी में बैठकर जवेरी के दुकान पर आयी।

‘पधारो रानी माँ पधारो। जवेरी ने आने को कहा। मुझे दो मोती खरीदना है।’ मदनमंजरी ने

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

वहां। भाग्य योग से जवेरी ने वही नर-मादा मोती की डब्बी खोली। मजनमंजरी ने वह मोती ले लिए, जवेरी से कहा, 'कल राजदरबार में आकर इसकी किंमत ले लेना, लाओ तुम्हारा रजिस्टर सही कर दूं।'

और मदनमंजरी दोनों मोती लेकर मालन के यहाँ आ गयी। दुसरे दिन सवेरे मालन को समझाकर मोती की डब्बी देकर मोतीचन्द के यहाँ भेजा। वहाँ जाकर मोतीचन्द के खाट के पास आकर कान में बोली 'लो यह तुम्हारे मोती कल सवेरे आकर मेरे यहाँ से मदनमंजरी को ले जाना। और मालन चली गयी।

मोतीचन्द मोती मिलने से खुश हो गया। पत्नी को लाने की पूर्व तैयारी करायी। दुसरे दिन धाम-धुम पूर्वक खुद के घर ले आया।

मदनमंजरी ने मोती किस तरह मिले इसकी सब हकीकत कही, 'उसने कहा सवेरे राज दरबार में जवेरी का कैसा नाटक होता है, वह देखना।' पत्नी की बुद्धि पर मोतीचन्द खुश-खुश हो गया।

इस तरफ दुसरे दिन सवेरे रजीस्टर लेकर रूपये लेने राजदरबार में गया। और किताब बताकर पैसे

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

मांगने लगा। तब राजा ने कहा, 'अरे पैसे कैसे और बात कैसी? मोती लेने को कौन आया था?' जवेरी ने कहा 'कल रात को रानी मां आयी थी।' 'रे रात कों तों रानी महल में थी, शरम नही आती ऐसा बोंलते वक्त? दरवान··निकाल दो इसे गेट के बाहर! ले लों सब माल मिल्कत।' मदनमंजरी ने पति से कहा 'देख लिया न? स्वामी! आपने दगा का फल कैसा होंता है?'

बाद में दोंनों आनंद से रहने लगे साथ में दान पुण्त के कार्य करते हुये समय पसार करने लये।

अर्थ प्राप्ति हेतु किया पुरुषार्थ अनर्थ क आमंत्रित करता है और भोग प्राप्ति हेतु किया पुरुषार्थ सत्वहीन बनता है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

भाग्य का खेल

राजन...! जीवित रहना हो तो इस राजमहल का त्याग करके जल्दी से चला जा। वरना आपत्ति के भयंकर काजल काले बादल में घिर जायेगा।

महल के विशाल आरामगृह में सोये हुये कुसुमपुर के महाराजा चंदन को मध्य रात्रि के समय में दो दो बार अदृश्य वाणी सुनायी पड़ी। उस वाणी को बोलने वाले व्यक्ति को देखने के लिए पलंग पर से ही महाराज ने इधर उधर दृष्टि दौड़ाई तभी अत्यंत रुपवान अप्सरा समान देवीने स्वयं के झगमगाते प्रकाश से पुरा शयन खंड प्रकाशमय बना दिया।

आंखे मसलते हुये राजाने पुछा, "तू कौन है ?" 'राजन मै तेरी कुलदेवी हुँ और सिर्फ तेरे कल्याण के खातिर तुझे आनेवाले विपत्ति के बादल से बचने के लिये सलाह दे रही हुँ।' और कुलदेवा अंतर्धान हो गई।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

प्रभात होते ही चंदन राजाने पट्टरानी मलयागिरि को रात्रि की घटना सुनाते हुये कहा, 'देवी, मध्यरात्रि में अपनी कुलदेवी प्रगट होकर अपनी कुशलता के खातिर मुझ से कहा 'राजन ! तेरे सरपे विपत्तियों के काले बादल मंडराने वाले है।' फिर आनेवाली आफत को कोई टाल नही सकता, इसलिए मेरा विचार तो ऐसा ही है कि बाद में निकल ने के वजाय अभी ही राजपाट छोड़कर चल पड़े।

स्वामिन ! इस में पुछने की क्या बात है ? आपके सुख में सुख, दु:ख में दु:ख मानने वाली मैं मुझे आपकी आज्ञा मान्य।' और उस दिन प्रजा के प्रिय चंदन राजा पत्नि मलयागिरि, पुत्र सायर और नीर के साथ चौधार आंसु से रोती हुई प्रजा को और राजपाट को छोड़कर जंगल की तरफ निकल पड़े।

अश्व और रथ के सिवाय बाहर कभी भी न निकलने वाले महाराजा को, अंत:पुर में प्रवेश करने के बाद कभी भी सूर्यप्रकाश के दर्शन न होने वाली मलयागिरि को, और फुल जैसे कोमल दोनों पुत्रों को आज उपर आभ और निचे धरती के सिवाय अन्य कोई सहारा न था। कांटे, कंकर और उज्जड मार्ग के

Aacharya vijay shri Surendrasurisworji Jain Tatvagyanshala

एकधारा प्रवास से पाँव की पिंडलियों में चिरे पड़ गये थे, शरीर घिस रहा था।

थोडे दिन के प्रवास के बाद छोटा राजकुटुँब कुशस्थल नगर के सीमा में आ पहुँचा। पत्नि को और दोनों पुत्रो को बाहरी भाग में रखकर चंदन नगर में गया। नगर में घुमते घुमते एक जगह मंदिर में पुजारी की नौकरी ढुँढ निकाली। बाद में पत्नि और बच्चों के पास आ कर नगर के बाहर ही छोटी झोपड़ी बांधकर वहाँ निवास स्थान बना लिया।

चंदन हमेंशा सबेरे नगर के मंदिर में जाता है और शाम को अपनी झोपडीरुप महल में लौट आता है।

मलयागिरि लकडियों के गठ्ठें बांधकर नगर में बेचने जाती है। दोनों बालकों को झोंपडी में रखती है संध्या समय चारों मिलकर प्रेम से रहते है। इस तरह का हमेंशा का क्रम चला आ रहा है।

एक दिन शाम को नगर में व्यापार के हेतु से आये हुये सौदागर के उतारे पर मलयागिरि सर पे लकडीयो का ढेर लेकर 'भारा लो भारा, कोई भारा लो'...की आवाज लगाती आ पहुँची। मधुर और

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
आकर्षक आवाज सुनाई पड़ते ही सौदागर ने आवाज की दिशा में मुँह घुमाकर देखा और...रुप की प्रतिमूर्ति मलयागिरि को देखकर मन मैला हो गया ! दिल की घड़कने बढ़ गई !

सौदागर ने उस को बुलाकर उसके सर से लकडियों का भार उतारा परंतु सौदागर की दृष्टि मलयागिरि के आकर्षक अंग देखने में लगी होने से लकडियों के भार को देख नही सकी।

बाबुजी ! पैसे दो मुझे घर जाने में देर हो रही है। सौदागर ने लकडियों के डब्बल पैसे दिये। डब्बल पैसे मिलने से संतोष पा कर मलयागिरि खुद के झोंपडी में आ गई। सुबह से बिछडे हुये पति-पुत्रों को प्यार से मिली।

अब तो हमेंशा लकडियाँ लेकर मलयागिरि सौदागर के पास आती है। सौदागर भी दिन-प्रतिदिन ज्यादा पैसे देकर लकडियाँ खरीद लेता है।

सौदागर जादा पैसे देकर लकडियाँ क्यों खरीदता है ? और हमेंशा लकडियाँ ले जाने के बाद भी इन्नकार क्यों नही करता ? इसके पिछे के कपट को भोलीभाली मलयागिरि किस तरह से समझे।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
धगधग जलती हुई वासनाओं को थंडी करने के लिए और एक अबला के शील को छिन्न भिन्न करने के लिए तरसने वाले उस नर पिशाच सौदागर ने खुद के अंगत तिन चार आदमियों को खुद की योजना समझा दी।

बचाओ...बचाओ...बचाओ...!

लकड़ियाँ बेचने आयी हुई मलयागिरि को सौदागर के वे काल भैरव शैतानों ने उठाकर पास ही खडे हुये रथ में डाल दिया। बचने का निष्फल प्रयास करती हुई मलयागिरि बचाओ बचाओ चिल्लाने लगी। परंतु पवन बेगसे जाते हुये रथ से निकलती आवाज हवा में विलीन हो जाती थी।

थोडे दूर जाने के बाद सौदागर मलयागिरि को कहने लगा, हे मिनाक्षी! क्यों इस तरह चिल्लाति हो? तेरी यह सुन्दर काया श्रम करने के लिए है? नही... नही...तुं तो राजरानी बनने के योग्य है, मेरे जैसा धनाढ्य तेरा दास बनने के लिए तैयार है, यह सारी धन दौलत तेरी है उसका शान्ति से उपभोग कर और मिली हुई सुन्दर काया को सार्थक बना दें।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
सौदागर की बासना से खदबदती हुई बातों को सुनकर मलयागिरि ने असहाय होकर कान पर हाथ रख दिये ।

सतित्व का तेज मुख पर उभर आया, सौदागर को दूर ढकेलकर बोलने लगी दूर हो ! नादान मेरे शरीर में प्राण है तबतक शीलभंग नही होने दूगी और.. यदि शील भंग करने का प्रयास किया तो मेरे मुर्दे के अलावा हाथ में कुछ भी न आयेगा ।

मलयागिरि के हृदय में इस वक्त एक ही दुहा खेल रहा था :

"अग्नि में जलना भला, भला ही बिष का पान,
शील भंगना भला नही, नही कुल शील समान"

मलयागिरि के ऐसे तेजयुक्त वाक्यो को सुनकर सौदागर डगमगा गया ।

अब उसने धीरे-धीरे समझाकर उसे अपनाने का प्रयत्न शुरु किया ।

अब दुसरा कोई उपाय न होने से मलयागिरि सौदागर के यहाँ रहकर प्रभु भक्ति में समय पसार करने लगी ।

www.jaintatyagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasurisvarji Jain Tatvagyanshala

इस तरफ चंदन राजा मंदिर से शाम के समय खुद की झोंपडी में आया और देखता है, तो प्रिय पुत्रों सायर और नीर रो रहे थे। मलयागिरि को घर में देखा नही इसलिए चंदन ने दोनों बालकों से प्यार से पुछा बच्चों ! तुम्हारी माता अभी तक आयी नही ? तुम दोनों क्यों रो रहे हो ?

माता की अभी तक राह देखी परंतु वह नही आयी उससे हमारा धीरज तुटते ही हम रोने लगे बालकोने कहा।

सायर और नीर को घर में बैठाकर चंदन मलयागिरि को ढुंढने बाहर निकल पड़ा। चारो ओर घुमा परंतु मलयागिरि का कही भी पता मिला नही। मनमें विचारों के तुफान घिरने लगे। मेरी मलयागिरि का क्या हुआ होगा, हमेंशा मुझसे पहले घर आने वाली आज कैसे न आयी ! क्या कोई उठाकर ले गया होगा हाय फुल जैसे दो बालकों का क्या होगा ?

घुम फिर कर थका हुआ चंदन घर वापस आया दोनों बालकोंकी जवाबदारी को लेकर चंदनने दिमाग की संतुलन संभाल रखी थी।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

खुद की झोंपडी को छोडकर दोनों बालकों को गोद में लेकर चंदन कुशस्थल नगर के उद्यान में घुमने लगा। रास्ते में जो भी मिले उसे देखी पुछे मेरी मलयागिरि को, मेरी मलयागिरि कहाँ, देखी है। अरे…लकडीयाँ बेचने वाली उस लकडहारन को कोई तो बतावो।

पिताजी! पिताजी..! भूख लगी है। खानेको लाकर दो न। भूखे हुये बालकों को फल पान खिलाकर चंदन दिन पसार करने लगा।

घुमते घुमते एक दिन पानी से भरी हुई विशाल नदी के किनारे आ पहुँचे। उसका सामने किनारे पर जाना था इसलिये सायर को किनारे पर ही रख कर नीर को कंधे पर बैठाकर चंदन सामने किनारेपर पहुँचने के लिये पानी में तैरने लगा। थोडे समय में ही वह सामने किनारेपर पहुँच गया।

नीर को वहाँ रखकर चंदन सायर को लेने के लिये वापस पानी में पड़ा। नदी के बिच में पहूँचते ही दुःख भुख. परिश्रम व थकान के कारण नदी के बहाव में बह गया। किनारे पहुंचने के बहुत प्रयत्न किये परंतु सभी व्यर्थ। बेटा सायर! बेटा नीर! पानी में बहता हुआ चंदन चिल्लाने लगा,

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
चिल्लाने लगा। चिल्लाने की आवाज आमने सामने टकराकर विलीन हो रही थी।

नदी के पुर में घिरा हुआ चंदन आनंदपुर के किनारे फेंका गया।

बेभान अवस्था में पडा हुआ चंदन किनारे की शीतल वायु से सचेतन बना। खडा होकर सोचता है कि रे. कैसी विचित्र दशा में आ पड़ा हुँ! कहाँ... मलयागिरि...कहाँ सायर नीर और कहाँ मै। लाख लाख के दो पुत्र आमने सामने किनारे पर क्या कर रहे होंगे?

भूख से पिड़ीत चंदन के आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। जैसे तैसे करके नगर में जाकर कोई बड़े घर के चोतरे पर विश्रांति के लिये बैठा। वहाँथोड़ी देर बाद घर की मालकीन ने दरवाजा खोला और उसकी नजर बैठे हुये चंदन पर पड़ी।

भले परिस्थिति के आधीन होकर एक वक्त के राजा की ऐसी परिस्थिति सर्जायी परंतु···राज तेज तो ललाट से मिटा न था।

चंदन के रुप पर मोहित बनी हुई घर-मालकीन

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijay shri Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala
बोली मुसाफिर ! आपको घर में फिकर करना नही, यह घर आप ही का है । स्नान भोजन वगैरे कराकर संध्या समय उस घर की स्त्री बोली :

हे सुभग ! मेरे पति आज वर्षों से परदेश गये हुये है । वह कहाँ है उनका आजतक समाचार नही इसलिये आज से इस घर के मालीक आप ही है । मै आप ही की हुँ ।

उस स्त्री की बात सुनकर चंदन चमक गया ।

अरे···मै और यहाँ कहाँ फंस गया ।

बाद में वह स्त्री से कहता है, बहन ! मै शादीशुदा हुँ । मुझे दो बच्चे है, परनारी को मै माता समान मानता हुं । इसलिये तू दूर हो जा । मुझे न चाहिये तेरा वैभव कि न चाहिये तेरा यौवन । खुद कलंकित न बने इसलिये चंदन तुरंत ही शेठानी के घर से निकल गया ।

अंधेरी रात में नगर के सुनसान राजमार्ग से पसार होकर नगर के बाहर आया और श्रीपुर जाने वाले रास्ते पर जाकर एक बड़े वृक्ष के निचे आराम से सो गया ।

---

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

सूरज की सुनहरी किरणें खिलखिला रही थी। फिर भी चंदन गहरी नींद में था। थोडी देर में वहाँ सुढ में जल से भरा हुआ कलश युक्त एक हाथी आया। और उस कलश का जल चंदन पर डाल दिया। हाथी को चंदन के उपर अभिषेक करते हुये देखकर पिछे आये हुये मंत्री और सामंतोंने 'महाराजा की जय हो' के नारो से वातावरण गुंजा दिया।

मंत्रीओने चंदन से कहा, हमारे नगर के वारिस राजा की मृत्यु हो गई है इसलिये नये राजा पाने के लिये हमने तय किया कि हाथी के सुंढ में कलश सौंप दिया जाय। वह कलश का जल जिसपर डालेगा वही हमारे राजा...हाथीने आपके उपर अभिषेक किया है. इसलिये आप हमारे नगर के महाराजा हों। आप इस गजराज पर आरूढ़ होकर श्रीपुर नगर में पधारो। मंत्री सामंतों और लोगोंने नये राजा को नगर प्रवेश बड़े धुमधाम से कराया और उस दिन की शुभ बेला में चंदन श्रीपुर नगर के महाराज बन गया।

चंदन को राज्य मिला परंतु आत्मा को शान्ति नही नजर के सामने से मलयागिरि, सायर-नीर हटते नही थे। उनको खोजने के लिरे चारों तरफ राजाके

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasurisvarji Jain Tatvagyanshala

आदमीयों द्वारा तलास जारी किया। फिर भी लेश मात्र भी समाचार मिला नही।

महाराजा बने है परंतु...राजकाज में चित्त लगता नही। समय पसार हो रहा है।

इस तरफ बिछडे हुये और आमने सामने किनारे पर खड़े हुये सायर नीर रो रहे है। सायर नीर को पूकारता है, नीर सायर को पूकारता है। परंतु बीच का विशाल जल दोनों का संयोग कहां से करने दे।

व्यापार के हेतु से निकला हुआ कोई सार्थवाह वहाँ से जा रहा था। दुःख से पुकारते और रोते हुये बालकों को देखकर सार्थवाह ने उन्हे साथ ले लिये। खुद के पुत्र समान समझकर दोनों को पाल-पोसकर बड़ा किया।

बड़े हुये बाद दोनों भाइयों को एक दिन माता पिता की खोज करने का मन हो गया। एक रात को सार्थवाह के नाम से चिठ्ठि लिखकर वहाँ से चल पड़ा।

घुमते घुमते सायर और नीर श्रीपुर नगर के सीमा में आ पहुँचे। नगर में आकर चंदन राजाकी नौकरी स्विकार ली। चंदन राजा के महल के द्वारपर

www.jaintatvagyanshala.org

Jainacharya vijay shri Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

दोनों की चौकीदार की हैसियत से नेमणुक करवायी गयी ।

रोज राजा को सलाम करते है परंतु पिता पुत्रों को पहचानता नही, पुत्र पिता को पहचानते नही ।

इस तरह मलयागिरि भी चन्दन सायर नीर के याद में मन ही मन रोती हुई सौदागर के साथ रहती है ।

सौदागर मलयागिरि को खुद की पत्नी बनाने के लिये अतिशय प्रयत्न करता है, उसको समझाता है । परंतु मलयागिरि उसके पंजे में फंसती नही ।

सौदागर उसे अपनाने के सारे प्रयत्न में असफल होने के बाद भी उसका मोह उसे छोड़ सकता नही ।

अनुकुल समय की राह देखती हुई मलयागिरि भजन कीर्तन में समय पसार कर रही है ।

सौदागर घुमते घुमते खुदके माल, सामान और आदमीओं के साथ श्रीपुर नगर में आ पहुंचा । वही पर पडाव डाल दिया और किमती जडजवाहिर और दो चौकिदार लेकर सौदागर चन्दन महाराज के पास आ पहुंचा । जड जवाहिर भेंट स्वरुप महाराजा के

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
समक्ष रख दिये और नगर में व्यापार करने की रजा मांगी। साथ में अच्छे से दो चौकीदार की मांगनी पेश की।

महाराजा चन्दन ने महल के चौकीदार सायर नीर को ही सौदागर के साथ भेज दिये।

सौदागर पडाव के पास आ पहुंचा। पडाव के बीच में बड़े बड़े दो तंबु थे। उस में एक तंबु सौदागर का था। दुसरे तंबु में मलयागिरि रखी हुई थी। चारो बाजु नोकरों के छोटे छोटे तंबु थे। छोटे से गांव जेसा दृश्य दिख रहा था।

एक दिन राजा के दोनों चौकीदार और सौदागर के दोनों चौकीदार बातों में चढ गये। बातो-बातों में सायर नीरने अपनी पुर्वकालीन आपविती कहानी शुरु कर दी।

भाई हमारी आपविती सुनकर तुम्हारे हृदय दुःखो से भर जायेंगे।

कुसुमपुर के महाराजा चन्दन और महारानी मलयागिरि के हम दो राजपुत्र है। सायर और नीर हमारा नाम है। हमारे उपर ऐसी आपत्ति आयी कि

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
पहले हुये बातों से हम चारोंने नगर छोड़ा। घुमते घुमते कुशास्थळ नगर में आये। वहाँ पिताजीने पुजारी की नौकरी स्विकारी की माता लकडहारन बनी। एक दिन बहुत रात होने पर भी माता लकडीयाँ बेचकर वापस न आयी। इसलिये पिताजी उसकी ढुंढने गये। पिताजी और हम दोनों एक नदी के किनारे आ बैठे नदी पार करने के लिये पिताजी ने पहले नीर को कंधेपर बैठाकर सामने किनारे पर ले गये। फिर मुझे लेने आ रहे थे तब नदी के जोरदार वेग में खिचे गये। आज तक माता पिता के समाचार मिले नही। चारों जनों का छोटासा परिवार तुट गया है।

सायर नीर खुद की आपवीती जीस तंबु के पास सुना रहे थे वह तंबु मलयागिरि का था। और मलयागिरि उन दोनों की बात ध्यान पूर्वक सुन रही थी। उससे यह दोनों खुद के ही प्रिय पुत्र है यह जानकर तो उसका रोमरोम हर्षित हो उठा, हृदय आनंद से भर गया। हर्षावेश में मलयागिरि तुरंत ही तंबु के बाहर आकर बेटा सायर! बेटा नीर! कहती हुई दोनों प्रिय बालकों से लिपट गई और सिसक कर रोने लगी।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

माता को अचानक आयी हुई देखकर दोनों आनंदित हो गये परंतु इस आवाज को लेकर सौदागर जाग गया। मलयागिरि को बाहर बैठी हुई देखकर सौदागर सायर नीर को धमकाने लगा। अरे...तुम चौकी करने आये या किसी की स्त्री को उठाकर ले जाने आये हो ?

और वहाँ तिनों के बिच में चकमक होने लगी। सुबह होते ही पूरा मामला चंदन राजा के पास आया।

सौदागरने कहा, राजन ! आपके यह दोनों चौकीदार मेरे स्त्री को उठाकर ले जा रहे थे।

राजाने दोनों चौकीदार को पुछा, क्या ! इस सौदागर की बात सच है ? मलयागिरि भी वहीं खड़ी थी। महाराज को जवाब देते हुये दोनों चौकिदार ने रात्रि में जो आपविती कह सुनायी थी वह सब आपविती राजा चंदन को भी सुनायी।

सायर नीर की बातों से राजा चंदन का मन भर गया था। परंतु जबरदस्ती धीरज पकड़ रखी थी।

आपबिती के बाद में दोनों रोते रोते बोले, राजन ! माता बारह वर्षों के बाद मिली परंतु माता से अधिक प्यारे पिता चंदन हमें कब मिलेंगे ?

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya shri Sugunasuriswarji Jain Tatvagyanshala

मलयागिरि की आँखों में से सावन भादों बह रहे थे। और महाराज चंदन सिंहासन से उतरकर सायर नीर को विलग पड़े। और उनके रुध कंठ से शब्द निकल पडे बेटा! सायर....सायर...सायर! बेटा! नीर...नीर...नीर!

सौदागर तो यह सब देखकर आश्चर्यचकित हो गया। काटो तो खुन नहीं ऐसी उसकी स्थिति सर्जा गई।

बारा बारा वर्षों का वियोग, असह्य तापसे तपे हुये पिता-माता-पुत्रों को उस मिलन के उस शुभ दिन को कितना अवर्णनीय आनंद प्राप्त हुआ होगा!

सौदागर न्याय मिलाने आया परंतु मिला देश निकाल।

उसके बाद कुसुमपुर और श्रीपुर के महाराजा चंदन ने सायर नीर को युवराज बना दिये।

चारों जने फिर से आनंद से जीवन काल पसार करने लगे। विपत्ति में हिम्मत-शील टिकाने वाले संपत्ति को मिलाने वाले बनते है वियोग के बाद में सवाये संयोग को प्राप्त करते है।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

अक्ल बड़ी या भैंस

एक राज दरबार में एक विद्वान पंडित का आगमन हुआ, उन्होने कहा कि मैं भविष्यवक्ता हुँ। राजाने परीक्षा लेने के लिए पूछा कि पंडितजी यह सामने खड़ी गाय और घोड़ी दोनों गर्भवती हैं—इन्हे क्या होगा ?

'गाय को बछडा और घोड़ी को बछेडा"—पंडितजी ने जवाब दिया।

इस की सत्यता परखने के लिए, जब तक परिणाम न निकले, राजाने पंडितजी को रोक लिया।

गाय और घोड़ी ने समय पर शिशुओं को जन्म दिया। परन्तु द्वेषी सेवकों ने बछडे को घोड़ी के पास और बछेरे को गाय के पास रख भविष्य कथन की असत्यता राजा को कह सुनाया।

राजाने पंडितजी से कहा—'महाराज आपका कथन झुट सिद्ध हुआ है।' खुशामदी दरबारीयों द्वारा

www.jaintatvagyanshala.org

समर्थन किये जाने पर पंडितजी को सबकी हाथों नगर से अपमानित कर निकाल दिया गया।

Acharya vijay shree surendrasuri Jain tatvagyanshala

नगर से निकलते हुए पंडितजी के मन में विचार पैदा हुआ कि मेरे कपड़े गन्दे हैं, अतः धोबी से धुल-वाता हुआ निकल जाऊँ। वे धोबी के यहाँ पहुँचे। बातों ही बातों में पंडितजी ने राज्यसभा का पूरा किस्सा बयान किया। धोबी ने पंडितजी को ढाढस बंधाते हुए प्रस्थान करने की सलाह दी।

काफी दिन बीतने पर भी धोबी ने कपड़े नहीं लौटाये। पंडितजी कारा तगादा करने पर धोबी ने कहा - 'महाराज क्षमा करें, पानी में आग लग जाने से कपड़े जल गये हैं।

पंडितजी को लगा कि धोबी कपड़े पचाने की नियत रखता है इसीलिए ऐसी अनहोनी कह रहा है। और वे राजा के पास फरियाद लेकर पहुँचे। बेचारे को क्या मालूम था कि धोबी ने राजा से उनका बदला लेने के लिए ही प्रबंध रचा है।

राजाने पंडितजी की फरियाद सुन धोबी को बुलाया और पंडितजी के कपड़े नहीं देने का कारण पूछा।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay Shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

क्या करूँ महाराज ? पानी में आग लग जाने से पंडितजी के सब कपड़े जल गए हैं ।

'—मूर्ख ! पानी में आग भी लगती है ?' राजाने कहा । '—प्रभु ! जब गाय बछेरा और घोड़ी बछरा बन सकती है, तो पानी में आग क्यों नहीं लग सकती ?' अवसर देख धोबी ने कहा ।

राजा को अपनी भूल का पता लगा । उन्होंने पंडितजी से क्षमा मांगते हुए उनकी खुब आवाभगत करते हुए दान दक्षिणा दी । धोबी ने भी पंडितजी के कपड़े लौटा दिये ।

यही से कहावत चल निकली कि—शारीरिक बल से बुद्धिबल हमेशा श्रेष्ठ रहता है ।

संसार में ज्ञानी की अपेक्षा अनुभवी ज्यादा कीमती होता है । यदि ज्ञानी अनुभवी भी हो तो सोने में सुहागा । अनुभवी अर्थात व्यवहारदक्ष ।

— ❖ —

संसार की असह्य वेदना से उपर उठने के लिए संसार से संयम की ओर पक्ष पलटना ही एकमेव मार्ग है ।

www.jaintatvagyanshala.org

कौन किसका सगा?

हे आत्मा ! कुछ तो सोच कि इस धरती में तेरा कौन है ? कोई किसीका नहीं। आंखों से जो अपनत्व दिखाई देता है वह व्यवहारिक है। 'सुख के सभी है साथी – दु:ख में रहा न कोय।' आपके पास पास यदि पुण्य रुपी पुँजी है, संपत्ति है तो सभी सौ सौ बार झूकेंगे। परंतु यदि पुण्य रुपी पुँजी खत्म हो जाय, पाप का उदय हो तो सभी रफुचक्कर। सभी संबंध स्वार्थ पर बने हैं।

किसी ग्राम में एक वणिक रहता था। उस का पत्नी सुन्दर और प्रेमल थी। दंपति में परस्पर अटुट स्नेह था। वणिक का वाणिज्य बहुत तेजी में था। पैसा और सभी दूसरी वस्तुएँ सहज प्राप्य थी। परन्तु इन सभी सुखों के बीच उसे एक दु:ख सालता था, वह था—इतने वर्षों के दाम्पत्य जीवन के बाद भी पुत्र का अभाव।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
सुगुरु की सेवा और कृपा से असाध्य भी साध्य बन जाता है। इस विचार से वणिक ने एक सद्गुरु कीआराधना प्रारंभ की। 'हे महापुण्यशालियों, जोवन में एक बात जरुर ध्यान में रखिये कि इच्छित वस्तु की प्राप्ति सेवा से होती है सत्ता से नहीं। गुरु सचमुच ज्ञानी, ध्यानी और महातपस्वी थे। वणिक की भावना समझ उसके हित के लिए उसे सदुपदेश दिये और योगविद्या सिखाई।

एक दिन वणिक ने कहा—'हे गुरुदेव मुझे तो दीक्षा ले आपका शिष्य बनने की पूर्ण भावना है, परंतु लाचार हुँ। मेरी पत्नी का मुझसे घोर स्नेह है, मेरे विगर वह जी नहीं सकेगी। किसी कारणवश यदि मुझे भोजन के लिए दुकान में देर हो जाय तो वह प्रतीक्षारत भूखी बैठी रहती है। इसी प्रेमवश उसका त्याग करने को मन कचखाता है। यदि मैं उसे त्याग कर संन्यासी बन जाऊं तो उस बेचारी का इतने बड़े संसार में कौन।'

वणिक मोह रुपी दलदल में पूरा फंसा हुआ है—यह महाराज जान गये। उसने इस दलदल से छुडाने के लिये उन्होने कहा—भाई इस संसार में कौन किसका

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijayshri Sushilsuriswarji Jain Tatvagyanshala

सगा है? सब रिश्ते स्वार्थ के हैं। तेरी पत्नी भी स्वार्थ की सगी है। पर मेरी बात जल्दी तेरे गले से नीचे नहीं उतरेगी, अतः मैं जैसा कहूँ वैसा कर तो सब तेरे ध्यान में आ जाएगा।

मैंने जो तुझे योगविद्या सिखाई है उसके अनुसार जब तू घर जीमने जाय तो प्राण को ब्रह्माण्ड में चढा-कर मर जाने का बहाना करना। तत्पश्चात जो कुछ हो सो मुझे कहना। वणिक घर खाना खाने पहुँचा उसकी पत्नी ने उसके हाथ मुँह धुलाए थाली परोसी, प्रेम से पंखा करते हुए पती को जिमाने लगी।

वणिक ने दो चार कौर खाए और गुरु के बचनों को ध्यान में रख कर योग समाधी लगाई आँखे उपर चढाई, और खाते खाते लूढक पड़ा।

—अरे रे! यह क्या? पत्नी भौंचक्की रह गई। स्त्री स्वभावानुसार रोने पीटने लगी। आर्द्र स्वर सुनते ही पास पड़ौसी एकत्रित होने लगे। वैद्य को बुलाकर लाया गया। वैद्य ने कहा हार्टफेल हो गया है। पत्नी सुनते ही हृदयद्रावक रुदन करने लगी। पड़ौसियों ने वणिक के सगे-संबंधियों को सूचना दी। सब के एकत्रित होने के कारण सम्पत्ति चुरा न ली जाय,

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

इसलिए पेटी, पिटारा तिजोरी, आलमारी सभी पर ताले ठोंक दिये गये। फिर उसने सोचा सगे-संबंधी इकठे होगें, दाह संस्कार पूरा होते होते शाम हो जायगी, और मैंने अभी तक कुछ भी खाया नहीं है, भूखी हूँ दो चार कौर खा लूँ। यह विचार कर वह रसोई में जाकर खाना खाने बैठी।

यह सब वणिक देख रहा था। यह कैसी पत्नी है। मैं मर गया हूँ इसे मालूम है, फिर भी खाने बैठी है। यही इसका मुझपर प्रेम है? धिक्कार है इस स्वार्थी संसार पर। गुरुदेव ने सच ही कहा था।

देखते ही देखते बहुत सगे-संबंधी जमा हो गये। अर्थी पर वणिक को सुलाया और आंगन में लाये। एक और तमाशा। आंगन की दहलीज के दरवाजों से अर्थी बड़ी होने के कारण किसी ने कहा—देखते क्या हो, दरवाजे तोड़ डालो।

दरवाजे तोड़ डालो सुनते ही वणिक की पत्नी बोली—नहीं नहीं! दरवाजे मत तोड़ो, अर्थी को ही काट-छांट कर छोटी बना लो। दरवाजे टूटने पर कौन नया बनाएगा।

Aacharya vijay shri Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

वणिक ने अंतरपक्ष से देखा कि पत्नी दरवाजा तोडने के लिए तैयार नहीं। पती से दरवाजे ज्यादा प्रिय है। इस बीच कोई बढ़ई के पास से आरी लेकर आया। वणिक ने सोचा कि ये लोग शायद बांस काटते काटते मेरे हाथ पैर न काट डालें। अब कुछ करना चाहिये क्योंकि मैने संसार की माया देख ली है।

वणिक को कसमसाते देख कर सब चौंक पड़े। यह तो जीवीत है। उसे अर्थी पर से उठाकर अंदर आंगन में पलंग पर ले जाकर सुलाया। थोडी ही देर में वह आलस देता हुआ उठ बैठा। और जैसे कुछ भी खबर न हो, वसा अनजान बन पूछने लगा—यह क्या है? यह सब खुले सिर धोती लेकर क्यों इकठे हुए हैं?

वणिक पत्नी ने पूरी बात कही और अंत में कहा यह तो भगवान ने मेरी लाज रख ली है। आपकी दशा देखकर तो मेरा जीव ही निकल गाया था।

दूसरे दिन सभी परिस्थिति गुरुदेव के सामने रखते हुए कहा—सच में कोई किसी का सगा इस संसार में नहीं रहता। अब मुझे पत्नी की मोह नहीं रहा।

www.jaintatvagyanshala.org

अब आप मुझे संसार समुद्र से पार कस कर दीक्षा प्रदान कीजिये ।

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

वणिक को सच्चा वैराग्य उत्पन्न हुआ जान कर गुरु महाराज ने दीक्षा प्रदान की । और दीक्षा को अखंड रूप से पालता, वणिक ने सद्‌गति प्राप्त की ।

इसलिए हे पुण्यशालियों विषम – इस संसार चक्र में न फंसते हुए जन्मोजन्मो अनंत सुख प्रदान करते इस धर्ममार्ग में दृढ़ बनकर अनुक्रमे मोक्ष के अनंत सुख को धारण करने वाले बनो यही शुभेच्छा ।

> अर्थ प्राप्ति हेतु किया पुरुषार्थ अनर्थ को आमंत्रित करता है और भोग प्राप्ति हेतु किया पुरुषार्थ सत्वहीन बनता है ।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

लंगोट सर पर लगी

घने जंगलो से आच्छादित एक पर्वत की गुफा में नग्न संन्यासी आवास करते थे। माला जपते, भजन गाते, और आनंदपूर्वक दिन व्यतीत करते थे। पास पड़ौस के गावों के गोपाल और लकड़हारे अपने अपने काम निपटाते और संन्यासी के दर्शन कर लेते।

एक दिन लकड़हारों ने सेवा बुद्धि से प्रेरित हो नग्न संन्यासी को लंगोट भेंट की। संन्यासी ने भी भेंट स्वीकारी। एक दिन भाग्यवश ऐसा हुआ कि लंगोटी को रात में चूहों ने काट लिया, सुबह उठने पर संन्यासी ने पाया कि लंगोटी तो कट चुकी है, और वह फिर से दिगम्बर बन गया है।

दूसरे दिन लकड़हारों के दर्शनार्थ आने पर संन्यासी ने किस्सा बयान कर दूसरी लंगोटी की मांग की। ऐसा कई बार हुआ। पर गरीब लकड़हारे रोज रोज

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

लंगोटी कहां से देते। उन्होंने प्रार्थना की— महाराज! रोज रोज लंगोटी देने की बजाय क्यों न आप एक बिल्ली ही पाल लें। संन्यासी को बात जँच गई। अतः दो तीन दिन में ही लकड़हारों ने भी दो बिल्ली के बच्चे ला दीये।

बिल्लीरानी के पदार्पण के दो-चार दिन में ही चुहों का उपद्रव शांत हो गया, पर पश्चात दूध के अभाव में दोनों बच्चे दूर्बल हो कर मरण पथ तक पहोंच गए। क्योंकि एखाद दिन में ठीक समयानुसार रोज दूध कौन पिलाता?

तब लकड़हारों ने फिर कहा - 'महाराज, रोज दूध की व्यवस्था करनी होती है. क्यों न एक गाय रख लें जिससे आप भी दुग्ध सेवन कर सकेंगे, और बिल्लीयों को भी नियमित दूध सुलभ रहेगा।'

'ठीक है—ऐसा ही कीजिए।' संन्यासी ने कहा।

और दूसरे दिन सुबह, किसी भक्त के पास से एक गाय लाकर महात्माजी को अर्पित की गई। कुछ दिन तो सब ठीक-ठाक चलता रहा। परंतु चारा खत्म हो जाने पर, चारे के लिये महात्माजी गांव में

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
घर-घर घुमने लगे। भिक्षा में ही खुब समय ही जाने के कारण महात्माजी के भजन पूजन में व्याधान पड़ने लगे।

यह देख लोगों ने महात्माजी से कहा— प्रभु आपकी गुफा के पास ही बंजर भूमि है, वहाँ खेती कीजिये। इससे भरपूर चारा तो उपलब्ध होगा ही, अनाज भी खुब मिलेगा। और वर्षा ऋतु में चीखल रौंदते हुए गाम में आने का कष्ट भी बच जायेगा।'

संन्यासी गुफा में लौटे। दूसरे दिन से ही संन्यासी बंजर भूमि समतल बनाने में जुट गये। बीज बोए, उसकी रक्षा के लिए चारों ओर कंटीली आड़ियों की बाड़ लगाई। रात में पहरा दिया। अतः ऐसे जंजाल में उलझे कि कुछ भी रास्ता न सूझे। पर बरसात न हुई, अनाज पैदा नहीं हुआ। कुछ घास फुँस अवश्य पैदा हुई पर वह भी कब तक पुरती? खुराक के अभाव में गाय गायब और बिल्लीयाँ रफुचक्कर हो गई।

खेती का कर न भर सकने की वजह से अमलदार एवं मामलातदार संन्यासी को पकड़ कर ले गये कर न भर पाने की असमर्थता से मार पड़ी। और मार खाते-खाते संन्यासी हँसने लगे।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

आश्चर्यचकित मामलतदार ने संन्यासी से हँसने का कारण पूछा। —'क्या कहुँ रामायण।' और संन्यासी ने लंगोट से लेकर खेती की पूरी कहानी सुना दी। पूरी कहानी सुन मामलतदारने संन्यासी को छोड़ दिया। संन्यासी भी लंगोट फेंक भजन में लीन हो गये।

मानव भी एक वस्तु की प्राप्ति के पीछे अनेक वस्तुओं की इच्छा रखता है, परंतु वह पहले की प्राप्ति नही छोड़ता। पर इतना जरुर ध्यान रखने की जरुरत है कि...

...त्याग में ही सुख है।

आत्म साधन का मार्गी अधःपतन से दूर रहता है। राग, द्वेष और इर्ष्या मानवी की कमजोरी है।

www.jaintatyagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

न्याय की अग्नि परिक्षा

जिस राज्य में प्रजा को सच्चा न्याय मिलता रहता है, उस राज्य की प्रजा कभी असतुंष्ट नहीं रहती, और न ही अनीति के मार्ग पर चलती है। न्यायाधीश धनवान, मालदार मनुष्यों की ओर न खिचकर सही सच्चा न्याय दे, तभी उसे सही मानों में न्याय की अग्निपरीक्षा में खरा उतरा माना जा सकता है।

न्यायतंत्र राजतंत्र से अलिप्त रहे, तभी राजतंत्र चालक राजकीयो एवं आम जनता को सच्चा न्याय दिया जा सकता है। वैसे ही बिना भेदभाव दिये कानून की धाराएँ लागू कर सकता है।

इस, निर्देशित लेख पर से, सत्य का दर्शन जरूर होगा कि न्यायाधीश स्वत: के पुत्र को स्वतः के हाथों दंड देने में भी नहीं संकुचाता।

www.jaintatvagyanshala.org

महाराज यशोवर्मा कल्याण कटकपुर राज्य का शासन नीति न्याय पूर्वक चला रहे थे। उनके सचोट न्याय की कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी। प्रजा के सुख में सुखी, और दुःख में दुःखी होने वाला ही सच्चा शासक माना जाता है। सत्ता के मद में चूर प्रजानायक प्रजा का किसी किस्म का हित तो कर ही नहीं पाता. विपरीत, प्रजा से विमुख हो जाता है।

नगर के बीचोंबीच महाराज यशोवर्मा का राज-महल था। महल के चौक में एक बड़ा घंटा बांधा गया था, उस घण्टे की गुंज में न्याय की अनुगूंज छिपी थी।

सेठ-साहूकार नौकर-चाकर था कि सामान्य जनता पर कोई भी हुए अन्याय का गूंज इस महल में लगे घण्टे की अनुगूंज में छिपी थी। घण्टानाद होते ही महाराज महल से उतर चौक में आ खडे हो जाते न्याय के मांगकर्ता की फरियाद सुन सत्य-असत्य का निर्णय कर न्याय देते।

महाराज यशोवर्मा कई बार वेश परिवर्तन कर एकाकी मध्यरात्रि में, प्रजा के दुःख सुख का निरिक्षण करने निकल पड़ते। धन के अथवा अधिकार के बूते

www.jaintatvagyanshala.org

कोई किसी पर अन्याय करता देखता, तो दूसरे दिन प्रातः राजसभा में बुलाकर दंड करते। गाँव के पास गन्दगी भी रहती ही है। जिन्हे न्यायप्रियता पसंद नहीं कलहप्रिय है वे राजा की निन्दा भी करते।

महाराज यशोवर्मा का अतिदुर्दम नामक पुत्र भी था। नाम के अनुसार ही वह स्वभाव से भी अति-दुर्दम ही था।

एक दिन राजकुमार अतिदुर्दम अश्वारूढ हो राज-मार्ग से जा रहा था कि वही रस्ते के बीचोंबीच एक गाय ब्याई हुई खडी थी और बछडा नीचे पडा था। तेज गति के अश्व का लगाम खींचते-खींचते भी, एक पैर तुरंत उनके बछडे पर गिर गया। और इसके लौह-नाल के कारण बछडे की तुरंत मृत्यु हो गई। बछडे की मृत्यु से प्रभावित गाय दुःख से रंभाने लगी, उछलकुद करने लगी। उसके नयनों से अश्रुधारा बहने लगी। कुमार को इस अकार्य से खुब मनस्ताप हुआ, पर अब क्या हो सकता था। दुःखी मन से कुमार वहाँ से चला गया।

गाय कभी बछडे को सूंघती कभी चारों पैरों पर

Acharya Vijayshri Jayendrasuriswarji Jain, Tatvagyanshala

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

कूदने लगती। इस दृश्य को देखते ही लोगों की भीड़ कुमार के कृत्य की निंदा करती हुई एकत्रित हो गई।

गाय में दैविक शक्ति थी। एक पास खड़े मनुष्य ने गाय के पास जा कर कान में कहा—तुझे यदि न्याय चाहिए तो जा राजमहल में। वहां चौक में एक बड़ा घण्टा लटका है। उसे बजाएगी तो उसके नाद पर महाराज खुद हाजिर हो कर तुझे न्याय देंगे।

दोपहर के भोजन का समय था। महाराज भोजन की तैयारी कर ही रहे थे, कि घंटा घनगर्जना करने लगा। महाराज नाद लहरी सुनते ही हाथ का कौर वापस थाल में रख हाथ धो नीचे आये। और देखा कि एक गाय घंटे की डोर को सींग में उलझा धड़ाधड़ बजा रही थी, राजा को देखते ही गाय घण्टा बजाना छोड़ शांत खड़ी हो गई।

राजाने पुछा की—'गौमाता क्या अपराध हुआ है?' गाय में दैविक शक्ति होने के कारण वह सब समझती थी, पर बोल नहीं सकती थी। अतः सींग द्वारा मार्ग बताती हुई आगे चलने लगी। उत्सुक राजा पीछे पीछे चलने लगा। और जहां बछडे का मृत

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
कलेवर पड़ा था, वहाँ आ पहुँचे। राजा ने खड़े लोगों से, बछडे को किसने मारा पूछा।

सब निस्तब्ध खडे रहे। समय बीतने लगा पर साक्षी देने कोई आगे नहीं आया। भोजन का समय बीतने लगा। मंत्री ने कहा—स्वामिन भोजन करने के पश्चात तपास कर लेंगे।

नहीं नहीं मंत्रीश्वर! न्याय पूर्ण हुए बिना भोजन गले के नीचे कैसे उतरेगा?

मध्यान्ह बीत गई, सायंकाल होने आया, पिताजी नहीं लौटे, अतः राजकुंवर पिता के पास आया। पैर छु कर कहने लगा—'पिताजी, यह अपराध मुझसे हुआ है। जानबुझकर नहीं पर अनजाने में हुआ है। तेज गति से भागते अश्व की लगाम बहुत खींची, पर घोडे का पैर ताजा जन्मे बछडे पर पड़ गया और बछडे की मृत्यु हो गई।

कुंवर की बात सुनते ही राजा गंभीर गमगीन हो गया। आज तक का न्याय बिना किसी संघर्ष के किया गया था, पर आज का न्याय राजा की अग्नि-परीक्षा का कसौटी का था। न्याय कल राज्यसभा में होना निश्चित हुआ।

www.jaintatvagyanshala.org

दूसरे दिन का प्रभात निकला। सूर्यदेव की रश्मियाँ भूमंडल पर बिखरने लगी। लोगों ने कांपते हृदय से राज्यसभा में प्रवेश करना प्रारंभ किया। आज तक इस राज्यसभा ने अनेकों का न्याय देखा था, परंतु आज एक उत्तेजना कण कण में भरी थी। इसका एक ही कारण था, न्याय होनेवाला था राजकुँवर का, और न्याय सिंहासन पर थे खुद कुँवर के पिताश्री।

प्रजा का जितना प्रेम राजा पर था, उतना ही भाविराजा राजपुत्र पर भी। और राजा भी अपने पुत्र के दोषों को ढांके ऐसे न थे। प्रजा का मन में जिसका स्थान होता है, वही सच्चा राजा और राज्य क सही पालन कर्ता होता है।

सभा में महाराज पधारे। मंत्री, सामंत, साहूकार सभी हाजिर थे। नगरजनों में खुसपुस चालू थी, हंमेशा की तरह आनंद न था।

महाराज उठकर खड़े हुए। बोले—'विद्वानों इस बाबत में जो फैसला हो वह कहिये।

सभी के मुँह में मानो दही जम गया हो। कोई कुछ नहीं बोला। दूसरी बार पुछते ही एक ने कहा—

www.jaintatvagyanshala.org

'राजन्! कुँवर आपका इकलौता पुत्र है, और राज्य का भावी शासक भी। इसीलिये सोचना पड़ता है। और फिर राजन, इसका यदि इन्साफ करने में व्यवधान होता हो, तो कोई बीच का मार्ग निकाल योग्य करें यही प्रार्थना है।'

'नहीं – नहीं...कदापि नहीं। न्याय के सामने सभी समान हैं। इसकी धाराएँ राजा और रंक, सभी पर एक समान लागू होती हैं। भले ही यह मेरा इकलौता पुत्र और देश का भावी राजा हो, पर अभी तो अपराधी हो दंड का भागी है।' महाराज का कटु सत्य घन की नांई गरज उठा। लोग कांपने लगे। कितने ही कमजोर दिल वालों की आंखों से आंसू बहने लगे।

महाराजने फैसला किया—'जिस जगह बछड़े की मृत्यु हुई थी, वहाँ राजपुत्र सोएगा, और उसी भाँति घोड़े को उसके उपर दौड़ाया जाय।' यह मेरी आज्ञा है। राज्यसभा में फैसला सुनते ही लोग सिसकियाँ भर रोने लगे।

आज्ञा पालन हेतु कोई भी तयार न हुआ। तीन तीन बार आज्ञा दुहराई जाने पर इस कृत्य कोई भी करने तयार न होने पर राजा खुद अश्वारुढ़ हुए।

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
घोड़े को दौड़ाते वहाँ ले आए जहाँ कुमार सोया था। घोड़ा वहीं रुक गया। आकाश से पुष्पवृष्टि होने लगी। आकाशवाणी हुई - 'धन्य यशोवर्मा। धन्य तुम्हारा न्याय। न तो गाय ही थी, न बछड़ा, वे अदृष्य हो गये थे। यह सब तुम्हारी कुलदेवी मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। वास्तव में तुम न्याय की अग्नि परीक्षा में सफल हुए हो।'

इसी भाँति न्यायपूर्वक प्रजा की सेवा करते करते यशोवर्मा स्वर्गसुख को प्राप्त हुए।

> विवेकी महान है, जिसे आँख की उपमा दी जा सकती है, जिससे सार-निस्सार का ज्ञान होता है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

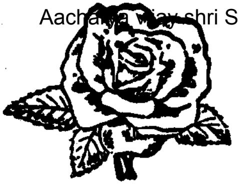

पाँच शेर

मन को आल्हादक लगे ऐसा; चित्त को आनंद मिला शके ऐसा एक सुन्दर नगर था। लक्ष्मीदेवी की असीम कृपा से समृद्धि वहाँ भरपूर थी। स्वर्ग की सुन्दरता से भी ज्यादा सुन्दर यह नगर में एक शेठ रहते थे। वह व्यापारी थे। किन्तु व्यापार में नीति को अंधेरे में रख दी थी। ग्राहक को माल नया दिखाते थे और देते थे सड़ा हुआ। सब कोठगते थे। शेठ की ऐसी अनिति से ग्राहको का आना जाना कमती हो गया था।

गरीब जनों को निचोड़कर शेठ पैसेवाले तो बने किन्तु...उससे क्या ?

क्या ? ऐसा निचोड़ा हुआ इकट्ठा किया हुआ पैसा शांति देगा ? सुख से रोटी खाने देगा ? नहीं नहीं ऐसा धन तो धुर्तलोग ले जायेंगे और पाप की गठरी बांधना है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aachārya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

शेठ का नाम था हेमाकचंद।

शेठ की यह कुटनीति से लोगोंने उसका नाम वंचक बनिया रखा था। सुबह में शेठ का नाम सुनने में आने से लोग भड़कते थे। शेठानी तो बहुत समय पहले स्वर्ग सिधार गयी थी। उसके पीछे एक लड़का छोड़ गई थी।

पुत्र का बड़ा होने पर शेठने उसका ब्याह बहुत धामधुम से किया। रुप, गुण विनय-विवेक के भंडार समान बहु घर में आयी। और उसके आते ही उतना बड़ा महल तेजवान हो गया। शेठ भी समजने लगे उसके बेटे का भाग्योदय हुआ है। ऐसी सुन्दर बहु मिली है।

बहु का नाम था सुगुणा। असलियत में वह नाम के समान गुणों से भरपूर थी।

सुगुणाने गृहप्रवेश करने के साथ ही उसने सब बोझ अपने शिर पर ले लिया और उसे आनंद हुआ। किन्तु एक बात उसे अच्छी न लगी वह बात थी ससुरजी की। ससुरजी को लोग बंचक बनिया कह पुकारते है। बंचक माने कपटी, झूठा...

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

लोगों का ऐसा तिरस्कारपूर्ण व्यापार से सुगुणा का मन दुःखीत होता था। और मन में सोचती भी थी कि ससुरजी को खुलेखुल सुना दे और उसकी ऐसी कुटनीति का त्याग करवा दे।

एक दिन की बात है हाथ पैर साफ करके शेठजी भोजन के लिए बैठे हुए है। बहु ने स्वादिष्ट भोजन पदार्थ परोसे। अवसर मिलने पर सुगुणा बोली :—

ससुरजी एक बात कहुँ? यदि आप बुरा न माने तो कहुँ? शेठ देखते ही रह गये। कुछ देर बाद शेठ बोले—कहो तुम्हें जो कहना है वह कहो। बेटी तुम तो मेरे घर की शोभा हो। बिना संकोच जो हो कह दो।

सुगुणा बोली : लोग आपका भराबुरा बोलते है। और कहते है कि शेठ कपटनीति वाले है। शेठ में नीति, न्याय और सत्यता का अभाव है।

शेठ हँसने लगे और कहने लगे—बेटी ऐसी हमारे व्यापार में तुम नहीं समझोगी। व्यापार में तरह तरह के लफरे होते है। उसमें न्याय, नीति, सत्यता को अंधेरे में रखना पड़ता है। अन्यथा किसी के घर पानी भरकर भी पेट नहीं भर सकता।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay Shri Surendrasurisvarji Jain Tatvagyanshala

सुगुणा बोली – ससुरजी ! आपकी यह समझ गलत है। आप थोडीसी गलत करते हैं। जहाँ नीति है वहाँ लक्ष्मी का निवास स्थान है। और...मुझे संपूर्ण भरोसा है कि आप में बतलाती हुँ ऐसा कीजिये और वह भी…छ मास के प्रयोग के लिये।.. !

शेठ ने कहा—ठीक है बेटी। तुने कहा वैसा ही में अवश्य करूँगा।

सुगुणा प्रणाम किया। सुखी रहो बेटी शेठने आशीर्वाद दिये।

शेठने अब व्यापार करने रीतभात बदल डाली। आगे वाली अनीति का त्याग किया। छोटा बड़ा या बुढ़ा जो भी ग्राहक आवें किन्तु किसी को अन्याय करना, कपट की बात नहीं। तोल माप सब बराबर रखने लगे जिससे किसी के साथ अन्याय न हों। ऐसा वर्तन के आचरण से शेठ की आबरु बढ़ने लगी। लोगों को विश्वास होने लगा। कामकाज बहुत बढ़ने लगा। और कम मुनाफा में ज्यादा व्यापार होने लगा। छ महिने में शेठ को पाँच शेर सोना का फायदा मुनाफा हुआ।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

शेठ आनंद से भरपूर हो गये। बहु को कहने लगे—बहु बेटी तेरी बुद्धि अजब है। और यह नीति भी एक तरह की बलिहारी है। बोलो अब क्या करें ?

सुगुणा ने उत्तर दिया—आप वडील पूज्य है, मेरी एक बात मानेंगे ?

शेठ ने कहा - जरूर, जरूर बेटी ! जरूर मानुँगा।

सुगुणा बोली—पाँचशेर सोना का एक पाँचशेरी वजन बनवाइये और उसके उपर चमडे का कवर दे दीजिये। ससुरजी ! बाद में उसके उपर नाम लिखवाईये शेठ हेलाकचन्द्र और बाद में जिसे चाहिए उसे दे दीजिये।

शेठ आश्चर्यचकित हुए और बोले अररर तब तो पाँचशेरी वापस ही नहीं आयेगी। जो ले जायेगा वह वापस ही नहीं करेगा।

सुगुणा बोली—पिताजी ! सत् का धन जाता नहीं नीति से कमाया हुआ धन कभी डुबता नहीं, लुँटा नहीं जाता और कमती भी नहीं होता। किन्तु उसकी बृद्धि ही होती रहती है। आपकी यह सच्ची आमदानी है। इस लिए उसे कुछ भी आँच नहीं आयेगी।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
शेठ बोले ठीक है ऐसा भी अनुभव कर ले।

शेठ ने पांच शेर सोना से पांच शेरी वजन वाला तोल बनवाया और उसके उपर चमड़े का कवर करवाया और अपना नामे लिखवाकर जिसे ले जाना हो उसे वह ले जाने की अनुमति प्रदान की। साथ में अलग अलग तोल भी लोगों को देने लगे, लोग ले जाने लगे।

एक के बाद एक बहुत लोग पांच शेरी ले जाने लगे किन्तु उसे वापिस देने लगे और दूसरे तोल नाप लोग खो डालने लगे।

शेठ का आश्चर्य का हिसाब नहीं...

शेठ बोले—बहु बेटी तेरी बात तो संपूर्ण सत्य है। पांचशेरी गुम नहीं होती। अन्य नाप तोल लोग खो डालते है। अब मैं क्या करूँ ?

सुगुणा बोली—आप मानोगे ?

शेठ ने कहा—जरुर मानुँगा।

सुगुणा बोली—यह पांचशेरी को गाँव के तालाब में डाल दीजिये। शेठ को जैसे करन्ट लगा हो वैसे स्तब्ध हो गये और खड़े होकर कहने लगे – हें ?

www.jaintatvagyanshala.org

सुगुणा कहने लगी–हैं नहीं, हाँ।

शेठ आश्चर्यचकित हो कर देखने लगे। बेटी पाँच शेरी तालाब में डाल दूं तो वह डुब जायेंगी और फिर से वापस हाथ में नहीं आयेंगी।

सुगुणा बोली—ससुरजी ! न्याय की आमदानी कभी डुबती नहीं। फिर से अपने पास ही आती है। आप चिंता न कीजिये। जैसे कहती हुँ वैसा कीजिये।

शेठ का मन माना नहीं। किन्तु बहुत ज्यादा धन आमदानी किया है इसलिये उसके सामने पाँच शेर सोने की किंमत कुछ भी नहीं। शेठ खुद गये। हृदय से दृढ़ न होने पर भी पाँचशेरी तालाब में डाळ दी। और दुकान में आ कर बैंठ गये।

शेठ व्यापार में व्यस्त हो गये। शेठ दुकान में बैठे हुए हैं तब दो माछीमार दुकान में आते है।

थेळा में से शेठ की नाम वाली पाँचशेरी निकाल कर कहने लगे–शेठजी आज हमलोगों ने तालाब में जाल डाली तब मछली के बदले यह चमड़े से मड़ा हुआ वजन हमलोगों को मिला। उसके उपर आपका नाम पढ़कर आपको देने के लिये आये है। उसके बदले में हमें दश शेर अनाज दीजियेगा ?

Aacharya vijay shri Surendrasuriswerji Jain Tatvagyanshala

शेठ स्तब्ध हो गये। मन में ही मन में बोले – वाह् रे वहुबेटी ! तेरी नीति, न्याय और सत्य के प्रति श्रद्धा। तेरी बात संपूर्ण सत्य है। पांचशेरी फिर से मेरी पास ही आ गयी।

धन्य बेटी ! धन्य .

शेठ ने पांचशेरी ले ली और खुश होकर दश शेर के बजाय आधा मन अनाज माछीमारों को दिया। वह लोग खुश हो कर शेठजी का गुणगान कर चले गये।

अब तो शेठजी का नाम संपूर्ण शहर में इज्जत के साथ बढ़ गया। शेठ वृद्ध हुए और एक दिन यह स्वार्थी दुनिया छोड़कर मृत्युधाम गये।

शेठ चले गये किन्तु नाम रह गया।

माछीमार भी लंबी मुसाफरी में निकलने के वक्त अपनी नावों को शुरू करते वक्त प्रथम शेठ का नाम स्मरण करते और वह नाम का शुभ शुकन मान कर समुद्र की मुसाफरी करते थे। ऐसे कर हजारों साल तक शेठ के नाम की कीर्ति फैलती रही।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

न्याय, नीतिपूर्ण धन एक के बाद एक पेढी ऐसे बहुत चलता है और रहता है। और अनीतिपूर्ण धन अल्प समय में नष्ट होता है।

मनुष्य भव मिलने के बाद जब मनुष्य में से मनुष्य जीवन के लायक नीति, न्याय मर जाती है, तब वह दानव राक्षसत्व को प्राप्त करता है। और बाद में अच्छा बुरा का विचार धर्म खो बैठता है। और अंत में जीवन हार जाता है।

ओ मीट्टी के मानव ! नीति, न्याय, सत्य की राह पर चल जीवन को सार्थक कर ले।

— ✠ —

मानवी को अध.पतन या उत्थान में संयोग निमित्त मात्र है। वास्तव में उसके आचार, विचार और वर्तन ही कारण मात्र है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

और पेटी से निकला बन्दर

अऽलख निरंजन कहता एक संन्यासी फिरता फिरता नगर में पहुँचा। नगर के राजा और प्रजा दोनों धार्मिक प्रवृत्ति के थे। रोज शाम मन्दिरों में भजन पूजन करते एवं आगत साधु-संन्यासी को दान दक्षिणा देते।

संन्यासी विद्वान थे। उनके प्रवचन लोगों को मंत्र मुग्ध करते। प्रभावित जनता उन्हे गृह प्रवेश हेतु आमंत्रित करती रहती। इस तरह संन्यासी का वस्तान उस नगरी में बैठ गया, और नित नूतन मिष्टान्नों के आयोजन ने उन्हे स्वस्थ बना दिया।

संन्यासी की कीर्ति राजा के कानों तक पहुँची। राजा द्वारा संन्यासी को राजमहल में पधारकर भोजन का आमंत्रण दिया गया। संन्यासी ने राजा की विनंती को स्वीकृति दी, और दूसरे दिन राजमहल में पहूंचने

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasurisvarji Jain Tatvagyanshala

पर राजपरिवार द्वारा स्वागत किया गया एवं सुस्वादु पकवान का भोग लगाया। मादक भोजन के प्रभाव से संन्यासी को आलस उतर आया और वे वहीं मखमली गादीपर निद्रादेवी का ध्यान करने लगे।

रात हुई संन्यासी के श्रीमुख द्वारा भजन कथा-वार्ता सुन राजा अत्यंत खुश हुआ एवं हमेशा लाभ मिलने का आकांक्षा से उसने संन्यासी को राजमहल में ही रोक लिया।

दिन बीतते गये। संन्यासी ने गांव के मन्दिर की बजाय राजमहल में ही डेरा डाल दिया।

एक वस्तु निश्चित ही है कि 'सुन्दरता जीवन को रूपान्तरित कर देती है।'

एक दिन, सुन्दरता का खजाना बनी। नाजुक अंगोवाली लालित्य से भरपूर राजदुलारी, राजकुमारी संन्यासी के दर्शनो के लिए आई और संन्यासी के मन में भावों का सागर लहराने लगा।

वाह—विधाता! वाह—कितना सुन्दर रूप है! मुख से मानों बोलते समय फूल झरते हों। कोयल सी मीठी वाणी पूरे तन में झंकार सी पैदा कर देती है।

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya Vijay Shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

[illegible] मान हो रही है। दोनों मृगनयन अच्छे अच्छों का मन डोलायमान कर दें ऐसे है। इस भांति संन्यासी रूप का मन ही मन में वर्णन करता हुआ उसे स्वतः की पत्नी बनाने की लालसा करने लगा।

मोह ने संन्यासी पर अधिकार कर लिया था। संन्यासी स्वतः को भूल गया और राजकुमारी की की सुन्दरता का ही ध्यान करने लगा। येन-केन-प्रकारेण राजकुमारी को प्राप्त करने की लालसा में ही उसका दिन-क्रम व्यतीत होने लगा।

एक बार संन्यासी ने अवसर देख राजा से पूछा कि—'राजन! यह पुत्री किसकी है?'

— महाराज! यह मेरी लाडली पुत्री है।

राम - राम—राम राम संन्यासी ने निःश्वास ली। राजा कुछ समझा नहीं, अतः पूछा—महाराज! आप उदास क्यों हुए?

अरे राजन! बात कहने सरीखी नहीं है। लेकिन कहिये तो राजा ने उत्सुकता दिखाई। संन्यासी कहा नहीं—नहीं कहने को दिल नहीं मानता।

www.jaintatvagyanshala.org

फिर भी तुम आग्रह करते हो तो सुनो—मेरे ज्ञान के आधार पर कहता हूँ कि यह तुम्हारी कन्या का भाग्य खोटा है। चाहें यह तुम्हें जितनी प्यारी हो पर एकदिन तुम्हारा घात करेगी।

राजा संन्यासी के प्रति श्रद्धाशील तो था ही। यह सुनकर कांप उठा। मन में विचारों के प्रवाह उमड़ने लगे। क्या मेरी प्रिय पुत्री मेरी ही घातक बनेगी? नहीं, नहीं—यह तो सोच भी नहीं सकता। पर संन्यासी की वाणी झूटी भी नही हो सकती। अब क्या करुँ? महाराज से ही उसका उपाय पूछूँ?

महाराज—आपके बचनों से मेरे हृदय को भूडोल का धक्का लगा है, इसका अब उपाय क्या?

उपाय—उपाय एक ही है। कन्या को संदुक में बन्द कर नदी में बहा दो। संन्यासी ने अपनी पाशवी इच्छा को इस तरह पूर्ति करनी चाही। और संन्यासी इतना कहकर नदी के तट पर बने अपने आश्रम में चला गया।

राजा ने संन्यासी द्वारा बताये मार्गानुसार पुत्री को लकडी की पेटी में बंद कर नदी में बहा दिया।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Shri Vijayshri Surendrasurishwarji Jain Tatvagyanshala

संन्यासी ने सोचा पेटी तैरती तैरती आश्रम तक पहुँचेगी ही और राजकुमारी सरलता से हाथ लग जायगी।

पर भाग्य दो पैर आगे ही था। नजदीक के राज्य का राजा कुछ सेवकों के साथ नदी किनारे फिरने निकला। उसने उस पेटी को देखा। आश्चर्य और कुतुहल से उसने उस पेटी को बाहर निकाली खोला तो उसमें से राजकुमारी के दर्शन हुए। राजा के मूँह से निकला—किस नादान पिताने इस देवकन्या सी सुन्दरी की यह हालत की है! राजा ने कुमारी को बाहर निकाल पेटी फिर पानी में छोड़ने का विचार किया पर खाली नहीं।

इसी समय एक मोटा बन्दर झाड के नीचे कुदा और राजा की तरफ कटकटाने लगा। राजा ने इसी बन्दर को पेटी में बन्द करने का निश्चय किया और सेवकों की आज्ञा दी। बन्दर सहित पेटी फिर से नदी में डाल दी गई।

कुवंरी को लेकर राजा अपने राज्य में चला गया।

दूसरी ओर पेटी की प्रतिक्षा में संन्यासी बैठा ही था। दूर से बहती आती पेटी देख खुशी से नाच

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
उठा—चलो बिना प्रयास ही कन्या हाथ लगी अब उसके सहवास में स्वर्ग सुख भोगूँगा। ऐसा विचार उसके मन में आया।

शिष्यों को पहले ही सूचित कर दिया था कि अमुक दिन एक पेटी तैरती हुई आएगी जिसमें एक कराल विकराल भूत बंदिस्त है मुझे उसे सिद्ध करना है। अतः वह पेटी तुम मेरे कमरे में रख देना. मैं बन्द कमरे में उसका साधना करूँगा। हाँ—एक बात और है साधना के समय खुब गड़बड़ मचेगी, तुम लोग घबराना मत, और कमरे का दरवाजा भी मत खोलना।

'जो आज्ञा'—शिष्यों ने आज्ञा शिरोधार्य की। और पेटी को बहार निकाल गुरु के कमरे में रखवा दी।

गुरुदेव सिर्फ लंगोटी पहन उद्विग्न चित्त से कमरे में पहुँचे और कमरे को बन्द कर पेटी झटाक से खोली। पेटी का मुँह खुला और अन्दर से एक क्रोधित बन्दर कर्कश स्वर में चीखता हुआ बाहर कुदा।

संन्यासी ठगे से खड़े रहे आश्चर्य से आँखे फट गई हाथ लूले हो गये, और शरीर में काटो तो खुन नहीं।

क्रोधित बन्दर ने स्वतंत्रता मिलते ही संन्यासी को

Aacharya vijayshri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala
[illegible] संन्यासी ने दरवाजा खोलने की कोशीश करते ही बन्दर ने संन्यासी के हाथ नोंच लिये। हुप हुप और बापरे की ध्वनि कमरे में गूंजने लगी।

बाहर खड़े शिष्यों को सब सुनाई तो दे रहा था, पर कोई खोलने का प्रयत्न नहीं करता है, क्योंकि उन्हें मालूम है कि पेटी का भूत ही गड़बड़ मचा रहा है।

बन्दर के क्रोधित हमले से संन्यासी बेहोश हो गया, बन्दर भी घबरा कर कोने में दुबक गया और पूरा वातावरण शांत बन गया।

दिन बीत गई। शाम होने पर भी दरवाजा न खुलने से शिष्यों ने अधीरतावश दरवाजा खोलने का निर्णय लिया।

उधर राजकन्या को पेटी में बन्द कर छोड़ देने के पश्चात नगर में अप्रचार फैल गया। गली गली में एक ही चर्चा होने लगी। बात नमक मिरची लगकर फैलने लगा।

आज राजसभा खचाखच भरी थी, शायद ही कोई घर में रहा था। महाराज के आगमन की

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

बेकरारी से इंतजार था। महाराज अफवाहों का खुलासा करने वाले थे, उसे सुनने के लिये सभा उत्सुक थे।

'महाराज धिराज की जय हो' सेवकों का ललकारी सुनते ही मंत्री - अधिकारी - शेठ - साहूकार अदब पूर्वक उठ खड़े हुए। राजा सिंहासन पर बैठे। क्षण भर शांतता प्रस्तापित हुई—इतने ही में द्वारपाल ने सूचना दी।

हुजुर - पड़ोसी राज्य के राजा आये है। साथ में राजकन्या भी है।

राजकन्या! राजा के साथ!! द्वारपाल की बात सुनकर महाराजा आश्चर्य मिश्रित स्वर में बोले। महाराज अतिथि राजन को सन्मान के साथ लेने द्वार तक गये। दोनों राजन आमने सामने होते हुए आलीगंन बद्ध हो गये, परस्पर गले मिले।

इस तरफ संन्यासी के शिष्यों ने सोचा गुरुजी के गये बहुत समय हो गया, अभी तक बहार नही नीकले, शिष्यो ने कमरे का द्वार तोड़ दिया और जैसे ही अन्दर जाने की कोशीष करे उससे पहले कमरे में

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

बंध बंदर छलांग लगाता हुआ बहार नीकल कर पेड उपर चढ़ कर बैठ गया और आजादी का श्वास लेने लगा।

शिष्यों ने जैसे ही कमरे के अंदर जा कर देखा तो गुरुजी बेभान अवस्था में कमरे के बीचोबीच पड़े हुए थे। उनके शरीर पर नाखुन से नोचने के अनेक निशान थे और उस में से खुन रीश रहा था। गुरुजी की अवस्था देखकर सब अचम्बे में पड़ गये। कमरे के कोने में पड़ी हुई पेटी के उपर दृष्टि पड़ते ही पेटी के अंदर भय से बंदर ने की हुई विष्टा और मुत देख कर सोचने लगे के हकीकत में पेटी के अंदर भूत था, बंदर या गुरुजी की मजाक! यह समजने के लिए सब शिष्यों अपना शीर खुजाने लगे।

गुरुजी को उठाकर कमरे से बहार लाया गया। शितल वायु में जल के छींटे देकर होंस में लाने की चेष्टा की गई। शरीर के उपर लगें हुए जखमो पर औषधी लगाई गई।

चेतना वापस लौटते ही संन्यासी सोचने लगा क्या··· राजन ने धोखा दिया! या किसीने ईर्षावश पेटी से राजकन्या निकालकर बंदर रख दिया! कुछ

www.jaintatvagyanshala.org

भी होगा जो हुआ अच्छा नहीं हुआ। कपट के बदले कपी मिला, भयंकर कृत्य का आचरण का फल मुझे बड़ा भयंकर मिला। अरे! आत्म साधना में लीन रहने वाला में उस पापाचरण में कैसे फस गया! शिष्यों के कारण पूछने पर में क्या जवाब दूंगा, अपने द्वारा किये गये आचरण से संन्यासी का हृदय प्रश्चा-ताप की आग में जलने लगा। मन राजन के पास जा के किये हुये कर्म का प्रायश्चित मांगने की प्रेरणा कर रहा था।

में अभी आया। शिष्य को इतना कह कर संन्यासी ने राजा के दरबार की तरफ दौड़ लगाई। राज दरबार के द्वार पर आते ही, राजन! राजन! राजन! अनिष्ट हो गया। क्षमा करो, भूल हो गई। की हुई गलती की, कीये हुए कृत्य का एकरार करने आया हुँ।

दौड़ दौड़ कर चील्लाते हुए संन्यासी को देख कर सब की नजर उनके उपर स्थिर हो गई। राजन भी सोच में पड़ गया, यह संन्यासी तो मेरे महल में प्रवचन दिया करता था और खुब तेजस्वी था। फिर अचानक उनको यह क्या हो गया! ऐसा क्युं कर रहे है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijaysuri Surendrasuri Gujwani Jain Tatvagyanshala

खड़े हुए श्वास पर काबु करते हुए संन्यासी अपने द्वारा रची हुई प्रपंच लीला का पड़दा फाँस करने लगा, बैठे हुए दरबारीओं एक ध्यान हो सुनने लगे।

संन्यासी द्वारा किये गये काले कृत्य को जैसे जैसे सुनते गये वैसे वैसे उनके मुख से हाय हाय! ये क्या! बापरे! यह आवाज सुनने वालो के मुख से नीकल पड़े, संन्यासीने राजकन्या से भी क्षमा याचना की।

प्राश्चाताप के आँसु द्वारा मन का बोझ उतार कर साधुजीवन की सची पगदंडी पर आ गया। महाराज से आज्ञा लेकर जंगल में अदृश्य हो गया।

उसके बाद महाराजा ने खुद अपनी राजकन्या का विवाह अतिथि राजन के साथ बड़ी शान के साथ कीया और खुद महाराजा धर्मकरणी द्वारा प्रभु भक्ति में जुट गया।

'मानव मात्र से गळती होती है लेकिन गल्ती का एकरार न करने वाला इन्शान, इन्शान न होकर पशु से भी हीन है।'

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

लोभ पाप का मूल

अनेक विप्र यात्रार्थ पदयात्रा करते हुए निकले थे। एक एक तीर्थ के दर्शन करते आगे आगे बढ़ रहे थे। एक दिन दिनढले सभी एक गाँव की धर्मशाला में आ पहुँचे। प्रवास से शरीर श्लांत हो चूकने के कारण थके-भूखे यात्रीयों ने विचार किया कि इस गाँव में किसी ब्राह्मण के निवास पर ही भोजन किया जाय और वे गाँव के एकमेव ब्राह्मण के घर पहुँचे।

जोइताराम ब्राह्मण कार्यवश घर से बाहर था, सिर्फ उसकी पत्नी जीवी और पुत्र ही घर में थे। आगत ब्राह्मणों ने जीवी से भोजन बनाने की प्रार्थना की, और वे सब तलाव पर स्नान के लिये चले गये। जीवी ने जल्दी जल्दी भोजन बनाया। इतने में जोइताराम घर आ पहुँचा। सुन्दर भोजन और चविष्ट पकवानों से उसके मुँह में पानी भर आया।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijayshri chandrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

'यह सब किसके लिए बनाया है?' जोड़ताराम ने पत्नी से पूछा।

पत्नी ने ब्राह्मण अतिथियों के आने का समाचार देते हुए कहा कि वे तालाव पर स्नान कर आते ही होंगे।

जोड़ताराम की नियत बिगड़ी। उसने पत्नी से कहा—'कुछ ऐसा प्रयत्न करूँगा जिससे विप्र बिना भोजन किये ही चले जाय।'

'—अरे ऐसा अनर्थ न करो। पाप लगेगा। अतिथियों से विश्वासघात होगा।' पत्नी ने कहा।

'—चुप रह। तुझे मुँह नहीं मारना है। महमानों के आने पर मेरे बीच में कुछ भी कहा तो पीट दूंगा।' जोड़ताराम ने पत्नी को धमकी दी।

अतिथि स्नान कर आने पर जोड़ताराम ने उनका स्वागत कर उन्हे बैठाया। और उसने धुर्ततापूर्वक जाल फेंकना प्रारंभ किया।

'आप जैसे विद्वानों के मेरे जैसे गरीब के घर पधार ने पर घर पावन हुआ। मुझे आज अतीव

www.jaintatvagyanshala.org

आनंद हो रहा है। परंतु आप पधारे तब मैं इस उठाकर लाई औरत और बालक के भरण पोषण की व्यवस्था हेतु बाहर गया था अतएव आपका स्वागत न कर सका।' जोइताराम गिड़गिड़ाया।

Acharya Shri Vijay Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

आगत ब्राह्मण चौंक उठे। क्या इस स्त्री को पकड़ कर लाये हो?

'क्या करूँ। मेरे जैसे शराबी जुआरी को कौन लड़की देता। कोई भी समझदार आदमी अपनी कन्या को दुख में कैसे डालता। इसलिए मैंने चमार वाडे से इस चमारन को घर में डाल लिया।' जोइताराम ने सफाई दी।

महमान भौंचक्के से रह धर्म जाने के भय से घर से निकल गये। भूखे-प्यासे लोगों ने फिर से तलाव पर शुद्धता के लिए स्नान किया और धर्मशाला पहुँचे।

जोइताराम खुशी खुशी पत्नी से बोला—देखा अब तो सप्ताह भर सुस्वादु भोजन मिलेगा।

पती के अनर्गल प्रलापों से व्यथित जली भुनी जीवी क्रोध से बोली—आग लगे इन मिठाइयों में, जिनके लिए मुझे चमारी और खुद को शराबी बनना पड़ा।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya Vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

'अरे परंतु यह हराम का तो नहीं है न। चालाकी का फल है, अतः चलो जीम ले।' पेट पर हाथ फिराता जोइतारात ने बोला।

सांसारिक जीवों को भी यही स्थिति है। मोह से ठगा जीव आत्मधन खा जाता है। और जीवन मूल्य अवमूल्यित हो जाता है।

— ⊠ —

अल्प सुख प्राप्ति के लिए किए पाप
महादुख में परिवर्तित होते है।

www.jaintatvagyanshala.org

पुरुषार्थ

उफनती जवानी में नेत्र सुख देने वाले सिनेमा, नाटकों पर प्रतिबन्ध लगाना, कर्णप्रिय सिनेगीतो उन्मादित गीतों पर सेन्सरशिप लागू करना, सुन्दर स्त्री के सहवास पर अपातिकाल जाहिर करना, पाँच पाँच इंद्रिय रूपी घोड़ो को मीसान्तर्गत कैदी कर अस्थिर बनी आत्मा के राजसिंहासन को स्थिरता प्रदान करना यह किसी विरल आत्मा के ही ललाट पर लिखा होता है।

जीवन की सच्ची राह को भूलभुलैया में डाल दे ऐसे आज के आधुनिक युग में त्याग के मार्ग अपनाना आश्चर्यजनक होने पर भी—

वैज्ञानिक युगीन मानव उसके फलद्रूप दिमाग में से नित नया सृजन करता है। उसमें उसके अथाग पुरुषार्थ, परिश्रम, तल्लीनता का ही मुख्य सहयोग है।

मानव के लिए कोई भी कर्म अशक्य या असफलीभूत नहीं। वह जो सोचता है, कर सकता है। पर उसके मन का निर्बलता का प्रभाव और पुरुषार्थ का अभाव, कार्य सिद्धि का अवरोधक बन जाता है।

पुरुषार्थ की प्रचंड शक्ति ही साधना सिद्धि में सहायक होती है।

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

चतुराई का फल

किसी चतुर एवं होशियार कलाकार ने प्रमाणबद्ध हूबहू स्वय की एक मूर्ति बनाई। मूर्ति इतनी सुन्दर बनाई गई कि लोग उसे ही कलाकार समझ बैठे।

कलाकार को लगा कि लोग मुझ में और मूर्ति में असल-नकल का भेद नहीं कर पाते—अब मैं क्यों न यमराज को ठगूँ।

कलाकार जब मृत्युशय्या पर पड़ा तब वह एक खोखली मूर्ति में जा बैठा। यमदूत उसे लेने आये, पर चक्कर खा गये कि इसमें कलाकार कौन है! तुरंत ही उन्होने एक योजना बनाई।

'वाह! क्या कला है! अच्छे अच्छे कलाकार इसके पैरों की धूल भी नहीं है। पर इनमें एक भूल रह गई है।'—यमदूतों ने प्रशंसा करनी शुरू की।

भूल रह गई सुनते ही कलाकार मूर्ति के बाहर निकल आया और पूछने लगा क्या भूल रह गई, क्या कमी है मेरी कला में ?

यमदूत बोले - तुम्हारे हमारे पास आ जाने की मूर्खता। और स्वयं की मूर्खता के कारण कलाकार यमसदन का अतिथि बन गया।

मानवों में अद्भुत शक्ति का भंडार भरा है। पर उस शक्ति को आत्मसात् करने में ही जीवन का उत्थान समाया हुआ है, इसका अजीर्ण नाश का कारण है।

www.jaintatvagyanshala.org

आचार्य

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

श्री विजय रामसूरीश्वरजी ग्रंथमाला के

—: अन्य प्रकाशनों :—

*१ श्री जैन धर्म प्रकरण रत्नाकर-प्रथम आवृत्ति अमूल्य
*२ श्री जैन धर्म प्रकरण रत्नाकर-द्वितीय „ ३-५०
३ श्री जैन धर्म प्रकरण रत्नाकर-तृतीय „ प्रेसमें १०-००
(साधु-साध्वीयों को भेट)
*४ स्वाध्याय सौरभ १-५०
५ ज्ञानपद पूजा सदुपयोग
६ पच्चखाण समय दर्शिका सदुपयोग
७ पच्चखाण समय दर्शिका सदुपयोग
(कलकत्ता के सूर्योदय हिसाब से) प्रेसमें
८ श्री यतिश्राद्ध व्रतविधि संग्रह (पत्राकारे) ४-००
९ कथा मौक्तिक माला-प्रथम आ० (कथा संग्रह) २-००
१० कथा मौक्तिक माला-द्वितीय „ (कथा संग्रह) ३-००
११ मैं साधु बन जाउंगा (हिन्दी कथा संग्रह) ३-००
१२ चमत्कार ना समकारा (कथा संग्रह) प्रेसमें ३-५०

---

* यह चिन्हवाले पुस्तकों उपलब्ध नहीं है।

प्राप्तिस्थान :—

आचार्य श्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्व ज्ञानशाला
झवेरीवाड. पटणीनी खडकी, अहमदाबाद-३८०००१

www.jaintatvagyanshala.org